UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182109
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 G72B   Accession No. P.G. 477

Author गोविन्ददास.

Title कौन ... 1948.

This book should be returned on or before the date last marked below.

बड़ा पापी कौन

(एकांकी नाटक)

गोविन्ददास

राजकमल प्रकाशन

पहली बार १९४८

राजकमल पब्लिकेशन्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली से मुद्रित।

मूल्य एक रुपया

बड़ा पापी कौन ?

(चार अंकों में एक सामाजिक नाटक)

पात्र

मुख्य पात्र—

त्रिलोकीनाथ—एक पुराना ज़मींदार और व्यापारी रईस

रमाकान्त—एक नया ज़मींदार और व्यापारी रईस

बनवारीलाल—एक दलाल

रंगलाल—रमाकान्त का मुख्य कारिंदा

मलका—त्रिलोकीनाथ की रखी हुई एक वेश्या

विजया—रंगलाल की विधवा साली

बड़ा पापी कौन ?

पहला अंक

स्थान—त्रिलोकीनाथ के मकान का बैठकखाना

समय—संध्या

[बैठकखाना पुराने रईसों के बैठकखाने के सदृश सुन्दरता से सजा हुआ है । दीवालों पर बीच में हरा तैल रंग है और किनारों पर काँच के रंग-बिरंगे टुकड़ों के बेल-बूटे बने हैं। सामने की दीवाल में तीन खिड़कियां तथा दाहिनी और बायीं ओर की दीवालों में दो-दो दरवाजे हैं। दरवाजे और खिड़कियों की चौखटों पर भी कांच के रंग-बिरंगे टुकड़ों का काम है। दरवाजों के किवाड़ों में कांच लगे हुए हैं। दरवाजों और खिड़कियों पर महरावदार हरे रेशमी परदे हैं। दीवालों पर यत्र-तत्र बड़े-बड़े चित्र तथा शीशे लगे हैं और छत से हरे रंग की हांडियां एवं झाड़ झूल रहे हैं। इन्हीं के बीच दो बिजलीके पंखे हैं। दीवालों में बिजली की बत्तियों के ब्रेकिट लगे हुए हैं और उन्हीके प्रकाशसे कमरा प्रकाशित है। सामने की दीवाल के बीच में एक घड़ी लगी है जिसमें छः बज रहे हैं। फर्श पर कालीन बिछा है, उस पर सफेद चादर से ढकी हुई गद्दी है और उस पर सफेद खोली से ढके हुए मसनद लगे हैं। बिजली की बत्तियों और पंखों को छोड़कर शेष सारी सजावट पुराने ढंग की है। गद्दी पर एक मसनद से टिका हुआ त्रिलोकीनाथ बैठा है—गेंहुए रंग और ठिगने कद का मोटा मनुष्य है। अवस्था लगभग ५० वर्ष की है। सिर पर पुराने ढंग के पट्टे हैं और बड़ी-बड़ी मूंछें तथा गल-

मुच्छे। सिर, मूछों और गलमुच्छों के आधे से अधिक बाल सफेद होगए हैं। वह काश्मीरी मलमीदे का ऊनी कोट पहने है, जिसपर कसीदे का काम है, और बङ्गाली ढंग की चुनी हुई पतली धोती। सिर खुला हुआ है। उसके निकट ही चांदी के थाल में चांदी का हुक्का रखा है, उसकी सुनहरी मटक से वह हुक्का पी रहा है। एक ओर चाँदी के पानदान में पान रखे हैं और गद्दी के नीचे चाँदी का पीकदान। त्रिलोकीनाथ के सामने गद्दी पर ही बनवारीलाल बैठा है। वह साँवले रंग का साधारण कद और शरीर का व्यक्ति है। उसकी अवस्था लगभग ४५ वर्ष की है। उसके बाल आधुनिक ढंग के कटे हैं और छोटी-छोटी काली मूंछें हैं। वह एक लम्बी सफेद रेशमी कमीज और बङ्गाली ढंग की चुनी हुई धोती पहने है। सिर पर दिल्ली-साई गोल पगड़ी और कमीज पर बढ़िया दुशाले की जोड़ी ओढ़े हुए है।]

त्रिलोकीनाथ (हुक्का गुडगुडाकर) हाँ,तो आपकी सलाह है कि मैं इस दफा चेम्बर की प्रेसीडेन्टी के लिए न खड़ा होऊँ ?

बनवारीलाल—मेरी तो यही सम्मति है, बाबू साहब।

त्रिलोकीनाथ—और इसका सबब बनवारीलाल जी ?

बनवारीलाल—एक तो आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं, हृद्रोग में पूर्ण विश्राम ही सबसे अच्छी औषधि है, दूसरे आजकल हरेक कार्य का ढंग बिगड़ता जा रहा है, आपका वंश हमारे यहाँ का सबसे प्राचीन रईसी वंश है, मैं नहीं चाहता कि आप अब इन सब झगड़ों में रहें।

त्रिलोकीनाथ—(जोर से हुक्का गुडगुडाकर धुआँ छोड़ते और मुसकराते हुए) साफ-साफ क्यों नहीं कहते बनवारीलाल जी कि आप लोग अब बाबू रमाकान्त को चेम्बर का प्रेसीडेन्ट बनाना चाहते हैं।

बनवारीलाल—यह बात नहीं है बाबू साहब, कम-से-कम मेरे

विषय में तो आपको यह विचारना ही नहीं चाहिए कि मैं इस उद्देश्य से आपको यह सम्मति दे रहा हूँ। मेरा तो बाबू रमाकान्त की कोठी की अपेक्षा आपकी कोठी से कहीं प्राचीन सम्बन्ध है।

त्रिलोकीनाथ—लेकिन अब तो आपका भी बाबू रमाकान्त की कोठी से ही ज्यादा ताल्लुक होता जा रहा है।

बनवारीलाल—इसके लिए क्या किया जा सकता है बाबू साहब ? हम लोग तो दलाल हैं, जहाँ अधिक काम मिलता है, वहीं जाना पड़ता है। इधर आपकी कोठी में कोई काम ही नहीं होता और उनके यहाँ सभी प्रकार के व्यापार होने लगे हैं। हमारा नगर इस देश के बड़े-से-बड़े नगरों में है, और यहाँ की मन्डी भी इस देश की किसी मन्डी से कम नहीं, पर यहाँ का भी अधिक नहीं तो कम-से-कम एक चतुर्थांश व्यापार अब उन्हीं की कोठी में चला गया है।

त्रिलोकीनाथ—(लंबी सांस लेकर) हाँ हां, यह तो है ही। आपको तो जहाँ पैसा मिलेगा वहीं आप जायंगे। (कुछ ठहरकर हुक्का गुडगुडाते हुए) क्यों बनवारीलालजी अगर मैं चेम्बर की प्रेसीडेन्टी के लिए खड़ा न हुआ तब तो बाबू रमाकान्त ही आसानी से चुने जायँगे।

बनवारीलाल—(कुछ ठहरकर सोचते हुए) हां, और तो कोई नहीं दिखता, मैं समझता हूँ, वे ही चुने जायँगे।

[कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है, त्रिलोकीनाथ हुक्का गुडगुडाता रहता है।]

त्रिलोकीनाथ—देखिए बनवारीलाल जी, आप लोगों की सलाह के सबब से ही मैं एसेम्बली के लिए बाबू रमाकान्त के खिलाफ खड़ा नहीं हुआ और वे एसेम्बली के मेम्बर होगए। आप जानते हैं, अगर मैं खड़ा होता तो वे कभी न चुने जाते ?

बनवारीलाल—हाँ, उन्हें कठिनाई अवश्य पड़ती।

त्रिलोकीनाथ—(कुछ उत्तेजित होकर) कठिनाई पड़ती ? अजी जनाब, मेरे मुकाबले में उनका चुना जाना बिलकुल गैर-मुमकिन था।

बनवारीलाल—आप एक बात नहीं देखते।

त्रिलोकीनाथ—वह क्या ?

बनवारीलाल—अब बाबू रमाकान्त के पास रुपया बहुत बढ़ गया है। आप इस समय कठिनाई में हैं। आप खर्च नहीं कर सकते थे और उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा के लिए रुपया पानी के समान बहाया होता।

त्रिलोकीनाथ—परन्तु अकेले रुपये से चुनाव नहीं जीता जा सकता था। मैं मामूली आदमियों की तरफ से नहीं, पर जमीदारों की तरफ से खड़ा हो रहा था, जमीदारों ने मेरे मुकाबले में उन्हें कभी वोट न दिये होते।

बनवारीलाल—परन्तु, बाबू साहब, अनेक जमींदार भी बाबू रमाकान्त के कर्जदार हैं।

त्रिलोकीनाथ—(हुक्का गुडगुडाते हुए चिढ़कर) खैर, जाने दीजिए, चुनाव हुआ ही नहीं, और होता तो उसका क्या नतीजा निकलता, यह फिजूल की बहस है।

बनवारीलाल—(सन्तोष के साथ) हाँ हाँ, निरर्थक वाद-विवाद है।

[कुछ देर तक पुनः निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक्का गुडगुडाता रहता है।]

त्रिलोकीनाथ—हां, तो मैं यह कह रहा था कि आप लोगों की सलाह के सबब से ही मैं एसेम्बली के लिए खड़ा नहीं हुआ।

बनवारीलाल—और यह सम्मति कम-से-कम मैंने आपको आपके ही लाभ के लिए दी थी।

त्रिलोकीनाथ—कैसे ?

बनवारीलाल—आपके हृद्रोग के कारण आपका बार-बार

शिमला जाना अत्यन्त भयानक था, फिर मैं नहीं चाहता था कि आप अपने इतने प्राचीन वंश की प्रतिष्ठा इस प्रकार के झगड़ों में खो बैठें।

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) आप मेरे सामने हर बात में मेरी दिल की बीमारी और मेरी खानदान की इज्ज़त के हौए इस तरह खड़े करने की कोशिश न कीजिए। मेरी दिल की बीमारी और मेरी खानदान की इज्ज़त का मुझे आपकी बनिस्बत ज्यादा ख्याल है।

बनवारीलाल—(कुछ सहमकर) हाँ, इसे तो कौन अस्वीकार कर सकता है, परन्तु आपके सच्चे शभचिन्तकों को इन बातों की चिन्ता नहीं है, यह आप नहीं कह सकते।

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक्का गुड़गुड़ाता रहता है।]

त्रिलोकीनाथ—मैं आपसे यह कहना चाहता था कि आप लोगों की सलाह के सबब से ही मैं एसेम्बली के लिए खड़ा नहीं हुआ। पर एसेम्बली एक दूर की चीज़ है और उसके मेम्बर तो मामूली-मामूली आदमी भी हो जाते हैं। लेकिन चेम्बर की बिलकुल दूसरी बात है, यह है आंखों के सामने। और रोजगारी फिरके में चेम्बर की प्रेसीडेन्टी सबसे ज्यादा इज्ज़त की जगह समझी जाती है। जब से चेम्बर कायम हुआ है, तबसे मैं ही उसका प्रेसीडेन्ट रहा हूँ और मेरे रहते दूसरा प्रेसीडेन्ट हो, यह मैं नहीं देख सकता। आपको जब मेरे खानदान और मेरी इज्ज़त का इतना ख्याल है तब आपसे मुझे चुनाव में पूरी मदद मिलनी चाहिए।

बनवारीलाल—(कुछ सोचते हुए) यदि आप खड़े ही होंगे तो मैं अपना मत आपको दूंगा, यह निश्चित है।

त्रिलोकीनाथ—लेकिन आपके अकेले मत से क्या होगा? आपको तो आगे होकर मेरी मदद करनी होगी। आप यहाँ के सबसे बड़े दलाल हैं। आपका सभी दलालों पर असर है। आप चाहें तो ज्यादातर दलालों के वोट मुझे ही दिला सकते हैं।

बनवारीलाल—(कुछ सोचकर) यह बड़ी कठिन बात है, बाबू साहब ।

त्रिलोकीनाथ—यह क्यों ?

बनवारीलाल—आप जानते हैं, बाबू रमाकान्त की कोठी का भी सब काम प्रायः मेरे यहाँ ही आता है । जब आपके विरूद्ध वे खड़े हो रहे हैं, तो मैं आगे होकर आपकी सहायता कैसे कर सकता हूं ?

त्रिलोकीनाथ—(कुछ सोचते हुए ठहरकर) मैं आपकी इस असमंजस को मानता हूँ। ऐसी हालतमें जिस तरह आपने उनके खिलाफ मुझे एसेम्बली के लिए खड़े न होने को मजबूर किया उसी तरह आप उन्हें चेम्बर के लिए मेरे खिलाफ खड़े न होने को मजबूर कर सकते हैं ।

बनवारीलाल—(कुछ सोचते हुए) परन्तु यह तो संभव नहीं जान पड़ता,बाबू साहब ।

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) यह क्यों ? मैं ही हर बात में मजबूर किया जा सकता हूं,वे नहीं ?

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है । त्रिलोकीनाथ हुक्का गुडगुडाता रहता है ।]

बनवारीलाल—इसके लिए मैं प्रयत्न कर चुका हूं, बाबू साहब, पर कोई फल नहीं निकला । चुनाव का अभी यथेष्ट समय होने पर भी इसी चुनाव के सम्बन्ध में वे दिल्ली की एसेम्बली की बैठक छोड़कर आज यहाँ आए हैं ।

त्रिलोकीनाथ—(घृणा से मुसकराकर) तभी आप मेरी दिल की बीमारी और खानदान की इज्ज़त वगैरह की बातें मेरे सामने रख-रखकर मुझे न खड़े होने के लिए मजबूर कर रहे हैं ।

बनवारीलाल—(जल्दी से) नहीं नहीं, यह बात नहीं हैं, वे दोनों कारण तो हैं ही, परन्तु.....

त्रिलोकीनाथ—(बीच ही में) ठहरिए, अगर वे आपका कहना

नहीं मानते हैं तब तो आप बिना किसी तरह के पशोपेश के उनसे यह कह सकते हैं कि त्रिलोकीनाथ हम लोगों के कहने से एसेम्बली के लिए आपके खिलाफ खड़े नहीं हुए। अब अगर आप हम लोगों के मना करने पर भी चेम्बर के लिए उनके खिलाफ खड़े होंगे तो हम उनकी मदद करेंगे, आपकी नहीं।

[बनवारीलाल चुप होकर सिर झुका लेता है। कुछ देर तक निस्तब्धता। त्रिलोकीनाथ हुक्का गुडगडाता रहता है।]

त्रिलोकीनाथ—कहिए, अब आपका क्या कहना है ?

बनवारीलाल—(धीरे-धीरे सिर उठाते हुए कुछ सोचकर) य.....य..... यह थोड़ा...क.....क.....कठिन प्रश्न है, बाबू साहब।

त्रिलोकीनाथ—(अत्यन्त क्रोध से) मैं तो जानता था जनाब, कि जब आपके मुँह से मेरी दिल की बीमारी, मेरी खानदान की इज्ज़त मेरे और आपके पुराने तल्लुकात वगैरह की मीठी-मीठी बातें निकल रहीं थीं, तब आपके पेट में दरअसल क्या भरा था ? (कुछ ठहरकर हुक्का गुडगुडाते हुए) बनवारीलालजी आपको चाहे इस रमाकान्त ने खरीद लिया हो, पर मेरे लिए तो अभी भी वह पैर की जूती से ज्यादा नहीं है। यह न समझिए कि अभी उसने मेरा एक मिल और एक गाँव खरीदा है, इसलिए उसने मुझे भी खरीद लिया, और वे मुझे दबा सकता है। अगर उसने मिल और गाँव खरीदे हैं,तो जितना रुपया दिया है, उससे सवाये दाम की जायदाद ली है। दुनिया में रुपया ही सब कुछ नहीं होता बनवारीलाल जी, वह तो खानगियों के पास भी हो जाता है। खानदान रुपये से कहीं बड़ी चीज है। मेरी सात पुश्त इस शहर में हो गईं, और वह अभी दस, बारह साल से यहाँ आकर बड़ा है। फिर हम यह भी तो नहीं जानते कि उसके बाप-दादे चोर थे या भटियारे। अरे उस घर में न कोई शाइस्तगी है, न तहज़ीब। अच्छी और बुरी चीज़ तक की परख नहीं, वही मसल है

कि 'बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद'। क्या थोड़ी सी अंग्रेज़ी और हिन्दी पढ़ लेने से ही कोई शाइस्ता हो जाता है? हाँ, रुपया उसके पास ज़रुर है। अगर रुपया पाखाने में होगा, तो वह दांत से उठा लेगा। चाहे मेरे पास रूपया न रहा हो,चाहे मैं कर्जदार हो गया होऊँ पर मैं, मैं ही रहूँगा, और वह, वही। फिर उसने रुपया किस तरह पैदा किया है, यह भी तो देखना चाहिए। कारखानों में मज़दूरों से किस तरह काम ले-लेकर उनका खून चूसता है। सरकारी अफसरों की खुशामद करके, और भी न जाने क्या-क्या करके किस तरह ठेके लेता है। एसेम्बली में भी वह खुदगरज़ी से गया है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे और मेरे बुज़ुर्गों के भी सरकारी अफसरों से खासे ताल्लुकात रहे,पर हम लोगों ने कभी उनसे रुपये-पैसे का फायदा नहीं उठाया। बल्कि हज़ारों और लाखों रुपये के चन्दे ही दिये। (कुछ ठहरकर जोर से हुक्का गुड़गुड़ा कर धुंआं छोड़ते हुए) न दीजिए मदद, बनवारीलाल जी, न दीजिए, आप सब खुदगरज लोग मुझे छोड़ दीजिए, पर मेरे बुज़ुर्गों के इकबाल और मेरे खानदान ने इस शहर और इस सूबे के लिए जो कुछ किया है, उसी की(तेज आवाज में) ताकत पर आज भी मुझे यक़ीन है कि मैं, (जोर से सिर हिलाकर) और ज़रूर मैं ही चेम्बर का प्रेसीडेन्ट चुना जाऊंगा।

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक्का गुड़-गुड़ाता रहता है।

बनवारीलाल—(धीरे-धीरे) बाबू साहब, आप अनेक बार उत्तेजित हो उठते हैं, किन्तु आपका हृदय शुद्ध है, यह मैं जानता हूँ, अतः आपने जो कुछ कहा, उसका मैं थोड़ा भी बुरा नहीं मानता। हाँ, आपके स्वास्थ्य पर इस क्रोध का बुरा प्रभाव पड़ता है। (कुछ ठहरकर) इतना मैं पुनः आपसे निवेदन करता हूँ कि मैं जो सम्मति आपको दे रहा हूँ, वह आपकी ही भलाई की दृष्टि से।

त्रिलोकीनाथ—(अत्यन्त क्रोध से) बस, बस, बहुत मैंने अपनी

भलाई सुन ली। माफ कीजिए, यदि आप मेरी इतनी भलाई चाहने वाले हैं तो आप रमाकान्त को क्यों नहीं बैठा देते ?

बनवारीलाल—मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूँ कि मैंने इसका पूर्ण प्रयत्न कर लिया।

त्रिलोकीनाथ—तब आप उससे यह साफ-साफ क्यों नहीं कह देते कि आप उसे मदद नहीं करेंगे।

बनवारीलाल—यह कह सकने की मुझमें शक्ति नहीं है।

त्रिलोकीनाथ—(चिढ़कर) तो बस, फिर हो चुका। आपका और मेरा आज से कोई ताल्लुक नहीं रहेगा। अब आप दोनों के दोस्त नहीं रह सकते, एक को चुन लीजिए।

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है। त्रिलोकीनाथ हुक्का गुड़गुड़ाता रहता है।]

बनवारीलाल—(धीरे-धीरे) बाबू साहब, आप एक बात नहीं देखते।

त्रिलोकीनाथ—कौनसी ?

बनवारीलाल—आप इस समय हर दृष्टि से निर्बल हैं। आपको इतने बड़े आदमी से शत्रुता कदापि मोल न लेना चाहिए।

त्रिलोकीनाथ—(घृणा से हंसकर) बड़ा आदमी ! मैंने कहा न कि मैं उसे पैर की जूती से ज्यादा नहीं समझता।

बनवारीलाल—यह कह देना सरल है, बाबू साहब, पर इस समय रुपया अत्यधिक शक्तिशाली है। सारे संसार को वह नचा रहा है। एक गँवारी कहावत है कि 'चाँदी की मेख, तमाशा देख।' आप अत्यधिक कर्ज़दार हो गए हैं, बाबू साहब। आप.....

त्रिलोकीनाथ—(एकदम आग-बबूला होकर खड़े होते हुए) अच्छा, तो आरजू-मिन्नत करते-करते अब आप धमकी देने पर उतारू हो गए। (चिल्लाकर) धमकी ? ओह, मुझे धमकी ? बस उठिए,

जाइए यहाँ से, मैं आपसे बात नहीं करना चाहता (क्रोध से इधर-उधर टहलने लगता है ।)

बनवारीलाल—(खड़े होकर) बाबू साहब, बाबू साहब.....

त्रिलोकीनाथ—(बीच ही में) आप जाते हैं या मुझे दरबान को बुलाकर कहना होगा कि आपको बाग के बाहर....(फिर भी न जाते देखकर, जोर मे) दरबान !....दर...

बनवारीलाल—(बीच ही में) इस समय आपको कुछ भी समझाना निरर्थक है, अतः मैं जाता हूँ, पर फिर भी आपसे कहे जाता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है, आपके लाभ के.....

त्रिलोकीनाथ—(चिल्लाकर) सुन लिया, सुन लिया, बस मुझे माफ कीजिए ।

[बनवारीलाल दाहिनी ओर के दरवाजे से जाता है ।]

त्रिलोकीनाथ—(टहलते और ओंठ को चबाते हुए) धमकी ! मुझे धमकी ! तीन कौड़ी का दलाल होकर मुझे धमकी !

[बायीं ओर के दरवाजे से मलका का प्रवेश । वह गौर वर्ण की साधारण कद और शरीर की अत्यन्त सुन्दर वेश्या है । उसकी अवस्था लगभग २८-२९ वर्ष की है । रेशमी गुलाबी ज़रीदार सलवार का सेट पहने है । मुसलमानी ढंग के जड़ाऊ आभूषण भी पहने है ।]

मलका—(आगे बढ़कर मुसकराते हुए) इस गुस्से पर सतके जाऊं । अगर अभी डाक्टर आ जायँ तो वह भला क्या कहेंगे ? (कुछ ठहरकर) मैंने आज की यह सब बहस पास के कमरे से सुन ली । इस तरह की बातों और तुम्हारे इस तरह के गुस्से से तो तुम्हारे दिल पर बहुत बुरा असर हो सकता है ।

त्रिलोकीनाथ—(टहलते हुए) ओह ! दिल क्या हुआ, सबसे बड़ी कैद हो गई । दिल के सबब से एसेम्बली की मेम्बरी के लिए खड़ा

नहीं हुआ, दिल के सबब से चेम्बर की प्रेसीडेन्टी छोड़ना चाहिए। दिल के सबब से जी भरकर शराब नहीं पी सकता। दिल के सबब से जिन्दगी भर जो कभी धमकी नहीं सुनीं, वह धमकी सुनकर भी गुस्सा न होऊँ। ऐसी जिन्दगी से तो मौत हजार दर्जे अच्छी।

मलका—(त्रिलोकीनाथ का हाथ पकड़कर गद्दी पर बिठाते और स्वयं बैठते हुए) अच्छा, अच्छा बैठो, वाहियात बातें मुँह से न निकालो। मौत हो तुम्हारे दुश्मनों की। (कुछ ठहर कर) मुझसे भी न बोलोगे ?

त्रिलोकीनाथ—(कुछ मुसकराते हुए मलका के गले में हाथ डालकर) तुमसे न बोलूँगा, तब तो कल मरते आज ही मर जाऊँगा। दिलाराम, इन तमाम तकलीफों में तुम्हीं तो एक आराम हो।

मलका—लेकिन तुमने यह सब तकलीफात खुद ही तो मोल ले रखी हैं। छोड़ो न सब झँझटें। क्या रखा है इस चेम्बर की प्रेसीडेन्टी में ? मारो लात।

त्रिलोकीनाथ—क्या कहती हो दिलरुबा, इस धमकी के बाद भी ? हर्गिज़ नहीं। तुम जानती हो मलका, कि खानदान को और अपनी इज्ज़त को मैं दुनिया में सबसे बड़ी चीज़ समझता हूँ। आज दस साल से तुम मेरे पास हो, तुमने देखा होगा कि चाहे मैं कितना ही खर्च क्यों न करूँ, कितनी ही शराब पीकर तुम्हारे साथ कितने ही आराम क्यों न भोगूँ, लेकिन किसीके सामने सर झुकाना मैंने नहीं सीखा। खर्च करने और आराम से रहने में मैं कोई बुरी बात नहीं समझता। मेरे बुजुर्गों ने रुपया पैदा किया था, मुझे उनसे मिला था, मैंने खर्च कर दिया। वह किसी दूसरे के बाप का नहीं था। और कर्ज़ ? कर्ज़ क्या कोई मुफ्त में या मेहरबानी करके देता है ? जायदाद है, लोगों को कौड़ी-कौड़ी पट जाने का यक़ीन है, इसलिए सूद कमाने को लोग कर्ज़ देते है। मैंने अगर कर्ज़ भी लिया तो किसी दूसरे के बाप की जायदाद पर नहीं। और बर्बादी ? अरे आबादी

और बर्बादी तो होती ही रहती है। कोई आबाद होता है और कोई बर्बाद। जो खर्च नहीं करते, साँप के माफिक दौलत पर बैठे रहते हैं, उनके पास क्या वह हमेशा रहती है ? किसी-न-किसी तरह चली ही जाती है। हाँ, अगर मैंने किसी को धोखा देकर, जालसाज़ी या फरेब किया हो, किसी गरीब का पेट काटा हो, किसी को किसी तरह का भी नुकसान पहुँचाया हो, किसी की बहू-बेटी की इज्ज़त बिगाड़ी हो, तो मैं किसी की आँख सहूँ, किसी की बात बर्दाश्त करूँ। (हाँफते हुए) धमकी ! ओह ! धमकी, तीन कौड़ी के दलाल की यह मजाल कि वह मुझे धमकी दे ?

मलका—आज तो सचमुच ही तुम्हारा बुरा हाल है। इससे तो तन्दुरुस्ती को बहुत बड़ा नुक्सान पहुँचने का अन्देशा है। (कुछ ठहर कर) अच्छा गाना न सुनोगे ?

त्रिलोकीनाथ—(मुसकराते और गले से मलका को लगाते हुए) ओह ! तुम्हीं मेरी सब बीमारियों की दवा हो। गाओ, दिलाराम गाओ, तुम्हारे पास रहने पर गुस्सा भी कहाँ तक रह सकता है ? (कुछ ठहर कर) पर हाँ, रूखा-सूखा गला क्या अच्छा लगेगा ?

मलका—ऐसे गुस्से की हालत में शराब...

त्रिलोकीनाथ—तुम्हारे बाद अगर कोई दूसरी चीज मेरी दवा है तो वही।

मलका—पर डाक्टर.....

त्रिलोकीनाथ—(क्रोध से) जहन्नुम में गया डाक्टर। डाक्टर की राय से अगर मैं चलूँ तो एक मिनट जीता नहीं रह सकता।

मलका—अच्छा, अच्छा, गुस्सा न हो, अभी मँगवाती हूँ। (जोर से) शाहज़ादी ! शाहज़ादी !

[स्वच्छ वस्त्रों में बायीं ओर से नौकरों का प्रवेश]

मलका—शीशी और गिलास।

[शाहज़ादी का प्रस्थान। एक चाँदी की चौकी पर कट-ग्लास

की सुन्दर 'डिकेन्टर' और दो कट-ग्लास के 'वाइन ग्लास' रखे हुए पुनः प्रवेश, तथा चौकी को गद्दी के निकट रख पुनः प्रस्थान। मलका गाना आरम्भ करती है। त्रिलोकीनाथ शराब पीता है।]

गाना—

जब सनम को खयाले बाग़ हुआ।
तालिबे नश्शये फ़राग़ हुआ॥
फ़ौज उश्शाक़ देखकर जानिब।
नाज़नी साहबे दिमाग़ हुआ॥
दिले उश्शाक़ क्यों न हो रोशन।
जब ख़याले सनम चिराग़ हुआ॥
ऐ 'बली' गुलबदन को बाग़ में देख।
दिले सदबर्ग बाग़ बाग़ हुआ॥

दूसरा अंक

स्थान—रमाकान्त के बंगले का कमरा।

समय—रात्रि।

[कमरा आधुनिक ढंग से सुन्दरतापूर्वक सजा हुआ है। दीवालों पर ज़मीन से चार फुट ऊंचाई तक फ़िरोज़ी रंग की फूल-दार विलायती ईंटों की 'डे डो' है और उसके ऊपर फ़िरोज़ी डिस्टेम्पर रंग। पीछे तथा दाहिनी और बायीं तीनों ओर की दीवालों में दो-दो ऊँचे-ऊँचे दरवाजे हैं जिनके किवाड़ों में फूलदार कांच लगे हैं। सब दरवाजों पर फ़िरोज़ी रंग के रेशमी परदे खिंचे हुए हैं। छत के चारों कोनों पर चार बिजली के कट-ग्लास के सफेद झाड़ तथा बीचमें सफेद रंग का पंखा झूल रहा है। फ़र्श पर सफेद रंग का संगमरमर लगा हुआ है। दो-दो दरवाजों के बीच में एक-एक लकड़ी की सुन्दर 'केबिनेट' रखी है जिस पर अनेक प्रकार के अंग्रेजी खिलौने सजे हैं। फर्शके बीचमें छोटे-छोटे ईरानी कालीन बिछे हैं, जिन पर गद्दीदार सोफे, आराम-कुर्सियां और साधारण कुर्सियाँ तथा टेबिलें सजी हुई हैं। सोफे एवं कुर्सियों पर फ़िरोज़ी रंग का मखमल मढ़ा हुआ है और फ़िरोज़ी रंग के ही रेशमी तकिये लगे हैं। टेबिलों पर गुलदस्ते हैं और उनमें फूल सजे हैं। दाहिनी ओर 'पियानो' है जिसके सामने गद्दीदार 'पियानो स्टूल और बायीं ओर राइटिंग टेबिल है जिसके सामने गद्दीदार 'आफिस चेयर' है। राइटिंग टेबिल पर चांदीसे मढ़ा हुआ लिखने का सामान एक सुन्दर घड़ी और एक टेबिल लैंप रखा है। लैंप जल नहीं रहा है।

राइटिंग टेबिल के निकट ही एक घूमने वाली 'बुक-शेल्फ' पर किताबें सजी हुई हैं। एक सोफा पर अंग्रेजी ढंग का गरम सूट पहने तथा खुले सिर रमाकान्त बैठा हुआ सिगरेट पी रहा है। यह गौर वर्ण का दुबला-सा मनुष्य है। अवस्था ३७-३८ वर्ष से अधिक नहीं। बाल अंग्रेजी ढंग से कटे हैं और 'बटरफ्लाई' मूछें हैं। हरे रंग के मोटे फ्रेम का चश्मा लगाये है और हाथ पर सोने की घड़ी है। उसके निकट ही विजया बैठी है। वह गेहुएं रंग की उन्नीस-बीस वर्ष की यद्यपि साधारण-सी स्त्री है, तथापि युवावस्था के कारण उसमें कुछ सौन्दर्य दीख पड़ता है। वह सफेद साड़ी तथा शालूका पहने है। गले में सोने का हार, कानों में सोने के इयरिंग और हाथों में सोने की दो-दो चूड़ियां हैं। बीच में मांग निकाल कर बाल साधारण ढंग से उठे हुए हैं। मांग में संदुर और मस्तक पर टिकली नहीं है, पर आखों में काजल है। उसकी वेष-भूषा से वह विधवा जान पड़ती है।]

रमाकान्त—विजया, तुम सचमुच विजया ही हो।

विजया—किस प्रकार, बाबू साहब ?

रमाकान्त—(उसके निकट सरक कर उसकी ठोड़ी पकड़ मुख ऊंचा उठाते हुए) किस प्रकार ? यह अब भी क्या पूछने की बात है ?

विजया—(कुछ मुसकराकर) क्यों, पूछने की बात नहीं है ?

रमाकान्त—मुझे इस प्रकार विजय कर लेने और मतवाला बना देने के पश्चात् भी ? विजया, तुमने मुझे केवल विजय ही नहीं किया है, परन्तु मुझे मतवाला भी बना दिया है। तुम जानती हो, भंग का दूसरा नाम विजया है ?

विजया—बाबू साहब, मैं तो सुनती हूँ कि अनेक कारिन्दों और नातेदारों की स्त्रियों से आपका इसी प्रकार का सम्बन्ध है।

रमाकांत—बिलकुल झूठ। हाँ, यह मैं स्वीकार करता हूँ कि एक दो अन्य स्त्रियों से भी मेरा इस प्रकार का सम्बन्ध हो गया था, परन्तु

उसे कई वर्ष हो चुके। अब अपनी पत्नी और तुम्हें छोड़ अन्य किसी से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।

विजया—(सिर हिलाते हुए) आप सच कहते हैं ?

रमाकान्त—देखो विजया, मैंने तुम्हें वचन दिया है कि मैं तुमसे झूठ न बोलूँगा। यदि मुझे झूठ बोलना होता तो मैं यही क्यों स्वीकार करता कि पहले मेरा एक-दो स्त्रियों से इस प्रकार का सम्बन्ध था। यह कहना ही इस बात का प्रमाण है कि मैं सत्य बोल रहा हूँ।

विजया—यदि ऐसा है तो भी मेरी कुशल कहाँ ?

रमाकान्त—यह क्यों ?

विजया—जिस प्रकार उनसे सन्तोष हो जाने पर उन्हें आपने दुत्कार दिया, वही एक दिन मेरा भी होगा।

रमाकान्त—(विजया को खींचकर गले लगाते हुए) आह ! विजया ! आह ! विजया ! क्या कहती हो ? कहाँ तुम और कहाँ वे। मैं सत्य कहता हूँ कि तुम्हारे पूर्व किसी ने मुझ पर ऐसी मोहनी न डाली थी।

विजया—(सिर हिलाकर मुसकराते हुए) ऐसा ?

रमाकान्त—(विजया का मुख चूमते हुए) मैं भगवान् को साक्षी देकर कह सकता हूँ, और तो क्या कहूं। विजया, विजया, तुमने तो मेरी यह दशा कर दी है कि अनेक बार आफिस में काम करते-करते, अनेक बार एसेम्बली में भाषण देते-देते तुम मेरे नेत्रों के सम्मुख आ जाती हो इसीलिए तो दिल्ली से दौड़कर आना पड़ा। (कुछ ठहरकर) क्यों, तुम किसी प्रकार भी दिल्ली नहीं चल सकतीं ?

विजया—बिलकुल असम्भव है। बहनोई जी मेरा जाना कभी स्वीकार नहीं करेंगे। फिर कहीं किसी को मालूम हो गया तो आपकी प्रतिष्ठा में कितना धक्का लगेगा ?

रमाकान्त—(कुछ सोचते हुए) रंगलालजी का ही झगड़ा है, मेरे

रमाकान्त—अवश्य, क्योंकि आपने इस सम्बन्धमें यदि कुछ किया तो लोग यही समझेंगे कि दुश्मनी के कारण किया है।

रंगलाल—उसके दूसरे साहूकार उस पर यह कार्रवाई करने को तैयार नहीं हैं। मैंने ढंग से कुछ लोगों के सामने यह चर्चा छिड़वाई। पर कोई कहता है कि मेरे पिता पर उसके पिता ने अमुक उपकार किया था और कोई कहता है मेरे दादा पर उसके दादा ने अमुक।

रमाकान्त—सचमुच ये व्यापारी बड़े मूर्ख हैं, यह नहीं सोचते कि कुछ दिन पश्चात् उनका सारा रुपया डूब जायगा।

रंगलाल—क्या कहूँ।

रमाकान्त—(कुछ सोचते हुए) जगन्नाथ रामनाथ से आपने चर्चा कराई ?

रंगलाल—हाँ, कहलाया था। वह यह कार्रवाई कर देता, क्योंकि उसका त्रिलोकीनाथ से पुराना झगड़ा है, पर उसके पास त्रिलोकीनाथ की कोई हुण्डी नहीं है।

रमाकान्त—(कुछ सोचते हुए) तब एक काम कीजिए।

रंगलाल—क्या ?

रमाकान्त—त्रिलोकीनाथ की पाँच हजार की एक हुण्डी जगन्नाथ रामनाथ के नाम से लेकर उससे यह कार्रवाई करा दीजिए; और अपनी बहियों में पाँच हजार का कोई जमा-खर्च न कीजिए। वह रुपया कुछ कम-अधिक करके दो-तीन बार में मेरे हस्ते नाम लिख दीजिए।

रंगलाल—(प्रसन्न होकर) यह आपने खूब सोचा, अब यह कार्य अवश्य हो जायगा। (नोटबुक में लिखता है।)

रमाकान्त—देखिए रंगलाल जी, यह बात भी यथार्थ में मैं त्रिलोकीनाथ की कोई दुश्मनी के कारण नहीं कर रहा हूँ। मेरी उसकी क्या दुश्मनी? परन्तु बात यह है कि इस प्रकार के वेश्यागामी और शराबी मनुष्य का हमारे चेम्बर का सभापति रहना हम सबके लिए घोर लज्जा का विषय है। यहाँ के व्यापारी ऐसे मूर्ख हैं कि वह कैसा है, यह न देख कर उसके पूर्वज कैसे थे, यह देखते हैं। फिर उसके यहाँ अनेक धार्मिक

संस्थाओं, अनेक विधवाओं, अनेक निर्धनों आदि का रुपया जमा है। यदि अभी उसकी जायदाद रिसीवर के हाथ में चली गई, तब तो कदाचित् सबको रुपया मिल भी जाय, परन्तु थोड़े दिन के पश्चात् यह आशा भी निराशा में परिणत हो जायगी, और इन धार्मिक संस्थाओं तथा बेचारे गरीब स्त्री-पुरुषों की वृथा के लिए हानि होगी। यदि साधारण लोग मूर्खता के कारण अपना हित नहीं देखते, तो हम पढ़े-लिखे लोगों को उनके हितों की रक्षा करनी चाहिए।

रंगलाल—अवश्य, अवश्य।

रमाकान्त—मैं स्वयं उस पर यह कार्रवाई करता, परन्तु इस समय मैं उसके विरुद्ध चेम्बर की प्रेसीडेन्टी के लिए खड़ा हो रहा हूं। लोग मेरा सद्-उद्देश्य तो देखेंगे नहीं, उलटा मुझपर स्वार्थ का दोषारोपण करेंगे। अतः इस समय मेरा यह न करना ही ठीक होगा।

रंगलाल—(सिर हिलाते हुए) बराबर, बराबर। आप विश्वास रखिए कि अब यह काम बहुत शीघ्र हो जायगा और किसी को कानोंकान, जगन्नाथ रामनाथ का त्रिलोकीनाथ के साथ पुराना झगड़ा होने के कारण, खबर न होगी कि हम लोगों का इसमें कोई हाथ है।

रमाकान्त—(नोटबुक देखते हुए) और कोई बात रह गई ?

रंगलाल—(नोटबुक देखते हुए) नहीं, और तो आप कोई आज्ञा नहीं दे गए थे। (सिर उठाकर) शेष सब कार्य ठीक ढँग से चल रहा है।

रमाकान्त—(नोटबुक और पेंसिल को टेबिल पर रख कुर्सी से टिकते हुए) अच्छा, अब एक नई और सबसे आवश्यक बात नोट कीजिए।

रंगलाल—(पेंसिल सम्हालते हुए) बहुत अच्छी बात है।

रमाकान्त—आज बाईस फरवरी हुई न ?

रंगलाल—जी हाँ।

रमाकान्त—ये अगले दिन अर्थात् पहली मार्च तक व्यापार की दृष्टि से बहुत ही महत्व के हैं।

रंगलाल—जी।

रमाकान्त—इस एक सप्ताह में हाजिर और बायदा दोनों प्रकार से आप जितनी अधिक-से-अधिक शक्कर खरीद सकते हैं, उतनी शक्कर खरीदिए, तथा जितना अधिक-से-अधिक नमक बेच सकते हैं उतना नमक बेचिए।

रंगलाल—(सिर झुकाकर नोट करते हुए) बहुत अच्छी बात है।

रमाकान्त—पर ये सौदे अपनी दूकान के नाम पर न होकर जो अपने अन्य डमी व्यापारी हैं, उनके नाम पर होने चाहिएं; और उसके विपरीत अपनी दूकान के नाम पर थोड़ी शक्कर बेच दीजिए तथा नमक खरीद लीजिए।

रंगलाल—इसी प्रकार व्यवस्था की जायगी। (नोट बुक में लिखता है।)

रमाकान्त—ये सारे सौदे बनवारीलाल की मार्फत ही होंगे न ?

रंगलाल—(सिर उठाकर) जी हाँ।

रमाकान्त—उसपर आपका पूरा भरोसा है ?

रंगलाल—पूरा पूरा। जितना विश्वास आप मेरा रखते हैं, उतना ही उनका रख सकते हैं।

रमाकान्त—पर मैं उससे इस सम्बन्ध में कोई बात नहीं करना चाहता।

रंगलाल—आवश्यकता भी नहीं है।

रमाकान्त—और देखिए, मैं परसों दिल्ली चला जाऊँगा। उसके पश्चात् ये सौदे होने चाहिएं।

रंगलाल—ऐसा ही होगा। [कुछ देर निस्तब्धता रहती है]

रमाकान्त—(घड़ी देखते हुए) ओह, बहुत देर हो गई (जेब से सोने का सिगरेटकेस निकाल एक सिगरेट जलाते हुए) तो फिर

अब आप जा सकते हैं। (रंगलाल उठता है, कुछ रुककर) और तो आपको कुछ नहीं कहना है न ?

रंगलाल—जी नहीं, मुझे तो और कुछ निवेदन नहीं करना है। (नोटबुक जेबमें रखता है तथा चश्मेका घर निकाल चश्मा उसमें रख वह भी जेब में रखता है।)

[रमाकान्त भी खड़ा होता है]

यवनिका

सम्बन्ध में तो तुम चिन्तित न हो। सारा प्रबन्ध इस प्रकार गुप्त रीति से किया जा सकता है कि किसी को कानों-कान खबर न हो। फिर विजया, समाज की वर्तमान परिस्थिति के कारण ही तुम्हारे और मेरे इस सम्बन्ध को गुप्त रखने की आवश्यकता है, अन्यथा मैं तो इस सम्बन्ध में कोई बुरी बात नहीं देखता। एक तो स्त्री-पुरुष के परस्पर सम्बन्ध में धर्म का कोई स्थान है, यही बात मैं नहीं मानता, दूसरे तुम तो बाल-विधवा हो। यदि तुम्हारे विवाह की समाज आज्ञा नहीं देता, तो तुम्हें अन्य प्रकार से दैहिक सुख भोगने का पूर्ण अधिकार है; और (कुछ रुक-कर और मुसकराते हुए) जो तुम्हें यह सुख पहुँचाता है, वह मेरी दृष्टि से पापी न होकर धर्मात्मा है।

विजया—(मुसकराकर) आपके ये बड़े-बड़े सिद्धान्त बहनोई जी से मेरे दिल्ली जाने की स्वीकृति लेने में सहायक न होंगे।

रमाकान्त—परन्तु उन्हें तुम्हारे और मेरे इस सम्बन्ध का हाल तो मालूम है।

विजया—यह बात अलग है, और आपके साथ मेरा दिल्ली जाना अलग।

[नेपथ्य में 'हुजूर' शब्द होता है। रमाकान्त और विजया, अलग-अलग हो जाते हैं।]

रमाकान्त—(जोर से) कौन, दरबान !

नेपथ्य से—हाँ सरकार, दरबान ही है।

रमाकान्त—क्या है, दरबान ?

नेपथ्य से—रंगलाल जी को हुजूर ने सात बजे बुलाया था, वे आये हैं।

रमाकान्त—अच्छा ठहरो, अभी बुलाता हूं।

विजया—(धीरे से) अच्छा, उन्हें बुलाया था ? मेरे दिल्ली ले चलने के सम्बन्ध में तो न कहोगे न ?

रमाकान्त— नहीं, नहीं, मैंने उन्हें अन्य कामों के लिए बुलाया है। तुम जानती हो, लगभग एक मास के पश्चात् आज प्रातःकाल ही मैं दिल्ली से लौटा हूँ। उन्हें अनेक आवश्यक कार्य सौंप गया था। आफिस में गुप्त बातें नहीं की जा सकतीं, इसीलिए यहाँ बुलाया था। परन्तु (मुसकराकर) मैंने कहा न कि तुमने मुझे इस प्रकार विजय किया है और ऐसा मतवाला बना दिया है कि मैं भूल ही गया था। (कुछ ठहरकर) तो फिर अब कल तुमसे इसी समय मिलना होगा।

विजया—अच्छी बात है। (उठकर बायीं ओर जाने लगती है।)

रमाकान्त—(धीरे से) ठहरो तो।

[विजया ठहर जाती है। रमाकान्त सिगरेट को 'एशट्रे' में बुझाकर उठता और आगे बढ़ उसका दृढ़ालिंगन करता तथा मुख चूमता है। वह मुसकराते हुए बायीं ओर के एक दरवाजे का परदा उठा उस दरवाजे से बाहर चली जाती है। रमाकान्त आकर पुनः सोफा पर बैठता है।]

रमाकान्त—(जोर से) दरबान, रंगलाल जी को ले आओ।

नेपथ्य से—जो हुक्म, हुजूर। [दाहिनी ओर के दरवाजे का परदा उठाकर लाल बनाती बरदी पहने हुए दरबान और उसके साथ रङ्गलाल आता है। दरबान आकर सलाम करता है और रंगलाल को छोड़कर पुनः सलाम कर बाहर जाता है। रंगलाल गेहुएं रंग का ऊंचा और साधारण शरीर का व्यक्ति है। अवस्था लगभग ४० वर्ष की है। गरम कपड़े का कोट और धोती पहने है। सिर पर दिल्ली साई गोल पगड़ी और गले में बंगाली ढंग का चुना हुआ श्वेत दुपट्टा है।]

रमाकान्त—आइए रंगलाल जी, बैठिए। कहिए नोट-बुक लाये हैं ?

रंगलाल—(निकट की कुरसी पर बैठते हुए) जी हाँ,

(मुसकराते हुए) दस वर्ष तक आपके निकट रहने पर भी आपके पास बिना नोटबुक के आ सकता हूँ ?

रमाकान्त—तो चलिए, राइटिंग-टेबिल पर ही बैठा जाय । वहाँ अपनी नोटबुक में भी मैं सब बातें देखता जाऊँगा ।

रंगलाल—बहुत अच्छी बात है ।

[रमाकान्त उठकर आफिस चेयर पर बैठता है । निकट ही एक दूसरी कुरसी पर रंगलाल बैठता है । रमाकान्त टेबिल लैम्प का स्विच खोलकर उसे जलाता है । फिर अपनी नोटबुक उठाकर एक लाल पेंसिल लेता और चश्मा उतार कर टेबिल पर रखता है । रंगलाल कोट के एक जेब से नोटबुक निकालता है जिसमें पेंसिल भी लगी है और दूसरे जेब से चश्मे का घर निकाल उसमें रखा हुआ सोने के फ्रेम का चश्मा लगाता है । फिर चश्मे के खाली घर को जेब में रख नोटबुक खोलकर पेंसिल हाथ में लेता है ।]

रमाकान्त—(नोटबुक खोलकर देखते हुए) अच्छा, पहले त्रिलोकीनाथ मिल के सम्बन्ध में बताइए कि क्या-क्या हुआ ।

रंगलाल—(कुरसी से आगे को टेबिल लैम्प की ओर झुककर नोटबुक देखते हुए) आप जितनी आज्ञाएँ दे गए थे प्रायः उन सभी का पालन हो चुका ।

रमाकान्त—अर्थात् ?

रंगलाल—(नोटबुक देखकर) क्लेरिकल स्टाफ़ लगभग आधा कर दिया गया और उनका वेतन पच्चीस परसेंट घटा दिया गया ।

रमाकान्त—(सिर उठाकर) कुछ हल्ला-गुल्ला तो नहीं मचा ?

रंगलाल—इतने लोगों के निकालने पर थोड़ा-बहुत हल्ला तो मचता ही है । एक वृद्ध ने अवश्य कुछ अधिक कष्ट दिया ।

रमाकान्त—किस प्रकार ?

रंगलाल—बात यह है कि लगभग पच्चीस वर्ष से, जब से मिल

स्थापित हुआ है,तब से वह नौकर था। बिलकुल बेकाम था। आँखों से दिखता न था और हाथ काँपते थे। इसलिए निकालना पड़ा।

रमाकान्त—बिलकुल ठीक। मिल कोई मनुष्यों का पिंजरापोल थोड़े ही है।

रंगलाल—वह यह कहता था कि उसका एकमात्र लड़का मिलमें ही एक्सीडेन्ट के कारण मर गया और अब उसके छोटे-छोटे नाती हैं। कहीं उसे नौकरी नहीं मिल सकती, इसलिए कुछ पैंशन मिलनी चाहिए, पर किसी को पैंशन देने की मुझे आज्ञा न थी।

रमाकान्त—पैंशन देने की आज्ञा कैसे दी जा सकती थी रंगलाल जी, जहाँ आप एक को पैंशिन देते, वहाँ दूसरों को भी देनी पड़ती। यदि उसे पैंशन की इच्छा थी तो मिल की नहीं, पर सरकारी नौकरी करनी चाहिए थी। (कुछ ठहर कर नोटबुक देख व सिर उठाकर) अच्छा मजदूरों का क्या हुआ ?

रंगलाल—(नोटबुक देखकर, सिर उठाकर) एक तिहाई मजदूर भी कम कर दिये गए और उनकी मज़दूरी भी पन्द्रह परसेन्ट घटा दी गई।

रमाकान्त—इस पर बड़ा हल्ला मचा होगा ?

रंगलाल—हाँ, इस पर कुछ अधिक हल्ला-गुल्ला हुआ, और सब से अधिक हल्ला तीन वृद्ध मज़दूरों ने मचाया जो बिलकुल बेकाम थे और जिन्हें निकालना अनिवार्य था।

रमाकान्त—ओह ! मिल क्या त्रिलोकीनाथ ने तो बिलकुल पिंजरोल ही बना दिया था।

रंगलाल—सबसे अधिक हल्ला उस समय हुआ जब निकाले हुए मजदूरों को क्वार्टरों से निकालाना पड़ा।

रमाकान्त—यह कैसे ?

रंगलाल—उनकी स्त्रियों ने बड़ा रोना-पीटना मचाया। किसी ने

कहा, हम यहाँ पच्चीस वर्षों से रहते हैं, किसी ने कहा, बीस वर्षों से। किसी ने कहा, हमारा पति यहीं मरा है और किसी ने कहा, हमारा पुत्र। किसी ने कहा, यहाँ हमारे चार शुभ हुए हैं और किसी ने कहा, छः विवाह।

रमाकान्त—वाह ! वाह ! यह खूब ! मिल के क्वार्टर थे या उनके पुश्तैनी घर।

रंगलाल—कुछ पूछिए नहीं, सब निकाले हुए लोग यही कहते गये हैं कि यदि मिल त्रिलोकीनाथ के पास रहता तो वे कभी न निकाले जाते।

रमाकान्त—निकाले न जाते ! अजी, मिल ही बन्द हो जाता। (कुछ ठहर कर) और पन्द्रह परसेन्ट मज़दूरी घटाने के कारण स्ट्राइक का तो कोई भय नहीं है ?

रंगलाल—नहीं, ऐसा अब तो नहीं मालूम होता।

रमाकान्त—क्यों, पहले कुछ था ?

रंगलाल—हाँ, पहले कुछ भय अवश्य हुआ था, परन्तु एक तो मैंने कुछ रिंग लीडर्स को लालच देकर मिला लिया था, दूसरे मैंने सबको इकट्ठा कर यह कह दिया था कि मिल हानि उठाकर नहीं चलाया जा सकता। यदि हानि न होती तो त्रिलोकीनाथ ही मिल क्यों बेचते। अतः यदि आप लोगों को पन्द्रह परसेन्ट कम मज़दूरी स्वीकार नहीं है तो हम लॉक-आउट करने के लिए तैयार हैं।

रमाकान्त—(कुछ ठहर कर) और इन निकाले हुए क्लर्कों और मज़दूरों के कारण नगर में तो कोई बुरी चर्चा नहीं फैली ?

रंगलाल—कुछ तो अवश्य फैली, पर आपने अभी एसेम्बली में जो एक भाषण दिया, वह इतना सुन्दर था, उसमें मजदूरों की दर्दक अवस्था का आँसू बहाने वाला ऐसा चित्र एवं उनकी सहायता के लिए सरकार से ऐसी हृदय-द्रावक अपील की कि यह सारी चर्चा उसके कारण ढक गई।

रमाकान्त—(मुसकराकर) अच्छा तो वह भाषण ठीक अवसर पर हुआ ?

रंगलाल—निस्सन्देह, और फिर मैंने उसका हिन्दी अनुवाद करा कर स्थानीय पत्र में पूरा-का-पूरा छपवाया तथा सम्पादकीय अग्रलेख भी लिखवाया। (कुछ रुककर) मैंने तो पत्र के वे अंक आपको भेजे थे ?

रमाकान्त—हाँ, मुझे मिल गए थे। आपने बड़ी बुद्धिमानी की। (कुछ रुककर) पत्र वालों को कुछ देना पड़ा ?

रंगलाल—आप जानते ही हैं कि ये सब काम तो इसी प्रकार कराये जाते हैं परन्तु कुछ अधिक नहीं।

रमाकान्त—कितना ?

रंगलाल—केवल पाँच सौ।

रमाकान्त—ओह ! यह तो कुछ भी नहीं है। (कुछ ठहर कर) मिल के सम्बन्ध में और क्या हुआ ?

रंगलाल—(नोटबुक देखते हुए) और तो आपकी कोई आज्ञा नहीं थी। (कुछ ठहरकर और सिर उठाकर) हाँ, हर कार्य की पूरी-पूरी व्यवस्था करने का प्रयत्न किया गया है।

रमाकान्त—जैसे ?

रंगलाल—एक ही दृष्टान्त देता हूँ। क्लर्कों और मजदूरों के टाइम-टेबिल पर पूरा ध्यान रखा जाता है। पहले लोग आधे-आधे घण्टे और कभी कभी घण्टे-घण्टे भर देरसे आते थे। इसी प्रकार शीघ्र भी चले जाते थे। अब स्पष्ट घोषणा कर दी गई है कि यदि कोई क्लर्क या मज़दूर पन्द्रह मिनट भी देर से आया या शीघ्र चला गया, तो उसकी आधे दिन की तनख्वाह या मज़दूरी काट दी जायगी।

रमाकान्त—क्लर्कों का यह हिसाब क्योंकर रह सकेगा ?

रंगलाल—इसका प्रबन्ध कर दिया गया है। माहवारी वेतन देते समय यह सारा हिसाब लगाकर तब वेतन दिया जायगा।

रमाकान्त—किसी की तनख्वाह या मज़दूरी अब तक कटी है ?

रंगलाल—क्लर्कों का तो इस मास के अन्त में हिसाब होगा, पर मज़दूरों में कई की मज़दूरी कटी है। बात यह है कि पुराने अभ्यास धीरे-धीरे ही छूट सकते हैं। पहले तो इस पर भी बड़ा तहलका मचा, पर अब शनैः-शनैः लोग ठीक समय पर आने लगे हैं।

रमाकान्त—तो मिल की हर प्रकार से ठीक व्यवस्था हो गई ?

रंगलाल—यह तो अभी नहीं कहा जा सकता, पर हाँ, अगले दो महीनों में मैं आशा करता हूँ, सभी कुछ ठीक हो जायगा। खर्च बहुत घट जायगा और प्रोडक्शन भी बढ़ जायगा। खरीद-बिक्री तथा स्टोर के ठेके आदि सभी बातों का प्रबन्ध नये मैनेजर अच्छी प्रकार कर रहे हैं। अब मुझे वहाँ केवल दो घण्टे के लिए जाना पड़ता है। मुझे इस मिल से यथेष्ट लाभ होने की आशा है।

रमाकान्त—और जैसे ही लाभ होने लगे वैसे ही मज़दूरी में पाँच परसेन्ट और क्लर्कों के वेतन में दस परसेन्ट बढ़ा दीजिए। आप जानते हैं रंगलाल जी, मैं किसी को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता, वरन् यथाशक्ति हर एक की सहायता करना चाहता हूँ।

रंगलाल—इसमें क्या सन्देह है ? आपकी दानशीलता आज केवल इस नगर और प्रान्त में ही नहीं, पर सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हो चली है।

रमाकान्त—दान के लिए भी तो रुपये चाहिए न ! रंगलालजी, इसीलिए तो कारबार और भी हिसाब से करना होगा।

रंगलाल—अवश्य।

रमाकान्त—यह तो नहीं होना चाहिए न कि अन्धे पीसें और कुत्ते खायँ।

रंगलाल—यह कैसे हो सकता है ?

रमाकान्त—इस बात का मुझे अत्यन्त दुःख है कि हमें आधे क्लर्क और एक तिहाई मज़दूर निकालने पड़े, परन्तु एक आदमी के काम के लिए दो तो नहीं रखे जा सकते, न बेकाम आदमी ही रखे जा सकते हैं।

संसार में बेकार मनुष्य तो बहुत हैं। कितनों को और कहाँ तक आप काम देंगे। जब टैक्स लेने वाली सरकार ही सब बेकारोंको काम नहीं दे सकती, तो हम इस विषय में क्या कर सकते हैं।

रंगलाल—इसमें क्या सन्देह है।

रमाकान्त—न मिल कोई कंगीरखाना ही है कि अपाहिजों को मुफ्त में भोजन दिया जाय। यदि त्रिलोकीनाथ के पास मिल रहता तो उसके बन्द होने में सन्देह ही न था। तब तो जितने आदमी अभी काम मे लगे हैं वे भी बेकार हो जाते।

रंगलाल—बिलकुल ठीक है।

रमाकान्त—इस बात का भी मुझे दुःख है रंगलालजी, कि क्लर्कों का वेतन तथा मज़दूरी कम करनी पड़ी। यह दुःख मुझे और भी अधिक इसलिए है कि मैं समाजवादी विचारों का हूँ। जब इस देश में समाजवाद स्थापित होगा, तब सबसे पहले मैं अपनी जायदाद छोड़ूँगा, पर जब तक यह नहीं होता, तब तक दूसरे पूँजीपति गुलछर्रे उड़ावें और मैं ही भूखे मरूँ, यह तो नहीं हो सकता है।

रंगलाल—कदापि नहीं।

रमाकान्त—(नोटबुक देख सिर उठाकर) अच्छा, अब त्रिलोकीनाथ से जो गाँव लिया है, उसके सम्बन्ध में क्या हुआ, यह बताइए।

रंगलाल—(नोटबुक देखते हुए) जमीदारी दुफसली जमीन के आस-पास जितने किसानों की जमीनें थीं उनमें से लगभग आधों की जमीनें ले ली गईं।

रमाकान्त—(आश्चर्य से) अच्छा, यह बहुत बड़ा काम हुआ।

रंगलाल—(सिर उठाकर) परन्तु इस काम में मुझे और अपने एग्रीकल्चर सुपरिन्टेन्डेन्ट दोनों को बहुत अधिक दिक्कत उठानी पड़ी।

रमाकान्त—यह कैसे ?

रंगलाल—आप जानते हैं कि किसान अपनी ज़मीन बड़ी कठिनाई

से छोड़ते हैं। किसी की ज़मीन दो पीढ़ी से चली आ रही थी, किसी की तीन पीढ़ी से। वह तो लगान बहुत बकाया पड़ गया है और उन्हें भय था कि यदि वे राजी-खुशी ज़मीन न देंगे, तो बेदखल हो जायंगे, इसलिए यह ज़मीन मिल गई, नहीं तो कदापि न मिलती।

रमाकान्त—परन्तु उनकी ज़मीन के बदले में ड्योढ़ी दूसरी ज़मीन देने की भी तो मैंने आज्ञा दी थी ?

रंगलाल—वह तो उन्हें दी भी गई। परन्तु आप जानते हैं, जो ज़मीन उन्हें दी गई वह एक तो एक फसली है, दूसरे गाँव से बहुत दूर पड़ती है, तीसरे किसान को उसकी पुरानी ज़मीन का बड़ा मोह रहता है।

रमाकान्त—हाँ, यह तो है ही, परन्तु इस तबादले से किसानों को भी बहुत लाभ होगा। ज़मीदार की ज़मीन के निकट उनकी ज़मीन रहने से ज़मीदारी कारिन्दों और उनका नित्य प्रति ही एक-न-एक झगड़ा रहता है। इससे वे मुक्त हो जायँगे।

रंगलाल—हाँ, ये सभी बातें उन्हें समझाई गईं, पर आप जानते हैं कि अशिक्षित लोग हैं, ये बातें शीघ्र उनकी समझ में नहीं आतीं।

रमाकान्त—तभी तो उनके हितों की रक्षा का भी सच्चा भार हमी पर है। अनेक बातें ऐसी होती हैं जिनमें वे अपनी हानि समझते हैं, परन्तु यथार्थ में उन बातों से उनका लाभ होता है और वे बातें हम उन्हीं की हित की दृष्टि से करते भी हैं। (कुछ ठहरकर) शेष आधी ज़मीन के सम्बन्ध में क्या हो रहा है ?

रंगलाल—इस कार्य को कुछ ठहर कर करना होगा।

रमाकान्त—यह क्यों ?

रङ्गलाल—(धीरे से) एक तो किसानों में बहुत उत्तेजना फैल गई है, झगड़ा होने का भय है, दूसरे आस-पास के गाँवों में इसकी बहुत चर्चा है। लोग कहते हैं, त्रिलोकीनाथ ने कभी किसी किसान की ज़मीन नहीं ली।

रमाकान्त—(कुछ क्रोध से) त्रिलोकीनाथ ! मूर्ख त्रिलोकीनाथ ! उसने यदि किसी की ज़मीन नहीं ली तो गाँव भर को कर्जदार बना दिया।

रंगलाल—परन्तु इसके लिए तो उससे लोग उलटे प्रसन्न हैं।

रमाकान्त—यह कैसे ?

रंगलाल—वे कहते हैं, जब किसी के घर में भी विवाह हुआ, या कोई मरा, और उसको रुपये की आवश्यकता हुई, तभी त्रिलोकीनाथ से उसे रुपया मिला; और उस रुपये की वसूली तक में त्रिलोकीनाथ ने कभी कोई सख्ती नहीं की, इसीलिए कर्ज होगया।

रमाकान्त—ऊँह, ये सब पुराने ढंग की बातें हैं। मैं किसी भी दशा में किसी को कर्जदार बनाने से बुरा और कोई पाप नहीं समझता। (कुछ ठहरकर सिर हिलाते हुए) तो उस गाँव के लोग कुछ उत्तेजित हैं ?

रंगलाल—कुछ नहीं, बहुत अधिक।

रमाकान्त—(कुछ सोचकर) तब एक काम कीजिए।

रंगलाल—वह क्या ?

रमाकान्त—बकाया लगान को छोड़कर शेष कर्ज में तो कानून के अनुसार ज़मीन से बेदखल नहीं कराया जा सकता।

रंगलाल—जी नहीं।

रमाकान्त—और ऐसे भी कई किसान होंगे जिनका यह कर्ज किसी अन्य प्रकार से पट नहीं सकता ?

रङ्गलाल—बहुत से।

रमाकान्त—ऐसे कर्ज का एक चिट्ठा बनाकर उसकी छूट की घोषणा कर दीजिए।

रंगलाल—(प्रसन्न होकर) यह ठीक है, इससे किसान प्रसन्न हो जायँगे।

रमाकान्त—(कुछ ठहरकर सोचते हुए) इस कर्ज़ के छोड़ने से यद्यपि हमारा कोई नुकसान नहीं होगा, पर किसानों के हृदय पर का बोझ तो हलका हो जायगा। अतः उनके प्रति तो उपकार ही हुआ न, रंगलाल जी ?

रंगलाल—इसमें कोई सन्देह नहीं है ?

रमाकान्त—(कुछ सोचते हुए) फिर आज ऐसा जान पड़ता है कि हमारा कोई नुकसान नहीं है, पर कल यदि किसानों की हालत सुधर जाय तो यह रुपया वसूल भी हो सकता है। अतः यथार्थ में यह हमारा त्याग ही है।

रंगलाल—अवश्य।

रमाकान्त—(कुछ सोचते हुए) और देखिए, एक काम और कीजिए।

रंगलाल—वह क्या ?

रमाकान्त—उस गाँव में कोई स्कूल तो नहीं है ?

रंगलाल—जी नहीं।

रमाकान्त—हज़ार-आठ सौ रुपया लगाकर स्कूलका एक अच्छा-सा मकान बनवाइए, और पच्चीस रुपये महीने पर एक अच्छा शिक्षक रखिए। उस स्कूल का उद्घाटन मैं कमिश्नर साहब से कराऊँगा, उसी समय कर्ज के इस छूट की घोषणा भी होगी। बस इधर-उधर की सारी चर्चा धुल जायगी और हम फिर अपना ज़मीन के तबादलों का काम आरम्भ कर सकेंगे जिसमें यथार्थ में हमारा और उनका दोनों का ही लाभ हो।

रंगलाल—यह बिलकुल ठीक है। (नोटबुक में पेंसिल से लिखता है।)

रमाकांन्त—(नोटबुक देखते हुए) गाँव के सम्बन्ध में और कोई बात है ?

रंगलाल—(नोटबुक देखते हुए) नहीं, और तो कोई आज्ञा

नहीं थी। (सिर उठाकर) वहाँ का अन्य कार्य ठीक ढंग से चल रहा है।

रमाकान्त—(फिर नोटबुक देखकर सिर उठा)अच्छा अब यह बताइए कि चेम्बर के चुनाव के विषय में क्या हुआ ?

रंगलाल—कैनवासिंग चल रहा है।

रमाकान्त—उसमें कैसी सफलता मिल रही है ?

रंगलाल—ये व्यापारी इतने पुराने दर्रे के विचारों वाले होते हैं कि कुछ पूछिए नहीं। चूँकि त्रिलोकीनाथ एक पुराने वंश का है, इसलिए उसके विरुद्ध कोई जाना नहीं चाहते।

रमाकान्त—किन्तु बनवारीलाल को त्रिलोकीनाथ के पास भेजने के लिए भी मैं आपसे कह गया था।

रंगलाल—वे आज गये थे।

रमाकान्त—फिर ?

रंगलाल—अभी आपके पास मेरे आने के पूर्व ही वे मुझसे मिले थे, त्रिलोकीनाथ बैठने को तैयार नहीं है।

रमाकान्त—पर रंगलालजी, त्रिलोकीनाथ के सदृश वेश्यागामी और शराबी मनुष्य का हमारे नगर के चेम्बर आफ कामर्स का सभापति रहना, अत्याधिक लज्जा की बात है। फिर वह शराब पीता ही नहीं, पर एक प्रकार उसमें नहाता है, और नहाता क्या, कच्छ-मच्छ के समान उसी में डूबा रहता है।

रंगलाल—मानता हूँ, पर क्या किजिएगा, व्यापारियों की बुद्धि की बलिहारी है।

रमाकान्त—और त्रिलोकीनाथ को इन्साल्वैंसी में ले जाने के सम्बन्ध में हम लोगों ने जो सोचा था, उस सम्बन्ध में क्या हुआ ?

रंगलाल—अपने यहाँ उसकी हुण्डियां हैं पर अपन उस पर यह कार्रवाई करें, इसके आप विरुद्ध हैं।

तीसरा अंक

स्थान—त्रिलोकीनाथ का बैठकखाना

समय—रात्रि

[बैठकखाना उसी प्रकार सजा हुआ है जैसा पहले दृश्य में था, पर अब ऋतु परिवर्तित होजाने के कारण दोनों बिजलीके पंखे चल रहे हैं। त्रिलोकीनाथ गद्दी पर मसनद के सहारे बैठा हुआ है। इस समय वह पतला-सा कुरता पहने है जिसकी ढीली बाहों पर इमली के चियें से पतली चुन्नट की गई है; और गले, बाहों के सिरों तथा चारों ओर की किनार पर लखनऊ की चिकन का काम है। उसकी धोती यद्यपि आज भी चुनी हुई है, तथापि वह बहुत ही पतली है। त्रिलोकीनाथ के निकट ही मलका बैठी हुई गा रही है, पर उसके कपड़े आज रेशम के न होकर पतले आबे रमा के हलके गुलाबी रंगे हुए हैं। उसके आभूषण जड़ाऊ, भारी न होकर हलके मोती के हैं। त्रिलोकीनाथ के गले में चैनी गुलाब की एक माला पड़ी है तथा मलका के गले में भी उसी प्रकार की माला एवं उसी प्रकार के गुलाब के भुजाओं तथा हाथों में बाजू-बन्द और कंकण हैं। गुलाब की कुछ मालाएं खाली मसनदों पर सजी हुई हैं। त्रिलोकीनाथ के पास ही चाँदी की चौकी पर शराब के डिकेन्टर और 'वाइन ग्लास' रखे हैं और वह ग्लास पर ग्लास चढ़ा रहे हैं। मलका के निकट एक चाँदी की चौकी पर चाँदी का गुलाबपाश रखा है जिस गुलाबजलको गाते-गाते मलका बार-बार त्रिलोकीनाथ पर छिड़कती और मुसकराती है। गद्दी पर दोनों के

बीच में चाँदी का पानदान है तथा गद्दी के नीचे चांदी का पीकदान।

गायन—

दिल उसको दिया हमने
तकसीर इसे कहते हैं।
मारा ग़मे फ़ुरक़त ने
ताज़ीर इसे कहते हैं॥
हम ख़्वाब में वाँ पहुंचे
तदबीर इसे कहते हैं।
वह नींद से चौंक उठ्ठे
तक़दीर इसे कहते हैं॥
जो मुझसे गुरेज़ाँ था
कल उसको मैं घर अपने।
बातों में लगा लाया,
तक़रीर इसे कहते हैं॥
मैं ख़ाक हुआ मर कर,
वह फ़ातिहे को आया।
अक़सीर इसे कहते हैं,
तस्वीर इसे कहते हैं।
दीवानी सी जंगल में
फिरती है पड़ी खेली।
जज़्बे दिले आशिक़ की
तासीर इसे कहते हैं॥
पी जब कि शराब उसने
कुन्दन-सा बदन उसका।
सोना इसे कहते हैं
अक़सीर इसे कहते हैं॥

शक्ल उसकी तसव्वर ने
खींची वरके दिल पर।
नक्काश इसे कहते हैं
तस्वीर इसे कहते हैं॥
बेजुर्म किया बिस्मिल
लाखों ही जवानों को।
सफ़्फ़ाक़ इसे कहते हैं
बेपीर इसे कहते हैं॥
महफ़िल से उठाने का
जब क़स्द किया उसने।
दानिस्तः मैं ग़श खाया
तज़बीर इसे कहते हैं॥
सौ क़त्ल किये खूं है
अरबू में न मिजगाँ में।
शमशीर इसे कहते हैं
और तीर इसे कहते हैं॥
कितना वह गुरेज़ाँ है
दर पै दिले नालाँ है।
सैयाद इसे कहते हैं
नख़्चीर इसे कहते हैं॥
अंजाम को कुछ सोचो
क्या क़िस्त बनाते हो।
आबाद करो दिल को
तासीर इसे कहते हैं॥
हैं पेशेनज़र अपने
हर वक्त तसव्वर में।

परियों की बस ऐ 'नासिख'
तसव्वीर इसे कहते हैं ॥

त्रिलोकीनाथ—(गायन पूर्ण होने पर जोर से) शाहज़ादी ! ओ शाहज़ादी !

मलका—क्यों ?

त्रिलोकीनाथ—ये दोनों डिकेन्टर खाली हो गए न ?

मलका—(चौंक कर डिकेन्टरों को देखते हुए) अच्छा, आज तुम इतना पी गए। ये दोनों भी खालीकर दिए;चार पहले और दो ये।

त्रिलोकीनाथ—नहीं, पहले चार में से तो दो तुमने पिये थे।

मलका—पर चार कुछ कम होते हैं ?

त्रिलोकीनाथ—और पीऊँगा दिलरुबा, और पिऊँगा; अभी दिल नहीं भरा।

मलका—तुम दीवाने तो नहीं होगए हो ? चार डिकेन्टर पी चुके, और पिओगे ? यह भी कोई बात है ?

त्रिलोकीनाथ—अब तुम भी धमकाओगी ? (क्रोध से) ओह ! इन धमकियों का कोई ठिकाना है !

मलका—मगर डाक्टर.....

त्रिलोकीनाथ—(बीच में, और क्रोध से) अब अगर तुमने डाक्टर का नाम लिया तो मैं सर पटक दूँगा।

मलका—लेकिन... .....

त्रिलोकीनाथ—अगर,मगर,लेकिन कुछ नहीं। मैं अपना खुदमुख्तार हूँ। ज़िन्दगी भर जो चाहा किया, अब भी जो चाहूँगा करूंगा। ओह ! कहाँ है वह हरामज़ादी शहज़ादी ?

मलका—वह शायद कहीं चली गई है। और शराब चाहते हो न ?

त्रिलोकीनाथ—पर तुम थोड़े ही लाओगी।

मलका—मैं न जाऊँगी तो तुम खुद जाकर ले आओगे।

त्रिलोकीनाथ—ज़रूर।

मलका—(एक डिकेन्टर उठाकर) अच्छी बात है लाती हूँ।

त्रिलोकीनाथ—नहीं, दोनों भरकर लाओ।

मलका—देखो....देखो.....

त्रिलोकीनाथ—बस धमकी नहीं, दिलरुबा, दोनों, ज़रूर दोनों लाओ।

मलका—(गिड़गिड़ाकर) मेरा इतना भी कहा न मानोगे ?

त्रिलोकीनाथ—(मुसकराकर) जब धमकाने से न माना, तब आरजू मिन्नत करती हो।..... ..(गले में हाथ डालकर उसका मुँह चूमते हुए) दिलाराम, माफ करो मैंने तुम्हें कुछ सख्त अलफाज़ कह दिए, पर तुम जानती नहीं हो कि आज मेरी दरअसल क्या हालत है ? (उसकी दृष्टि में एक विचित्र प्रकार की निराशा दीख पड़ती है।)

मलका—(चौंककर) क्या कोई नई बात हुई है ?

त्रिलोकीनाथ—ज़रूर।

मलका—वह कौनसी ?

त्रिलोकीनाथ—बताऊँगा, पर यह मौका तो उस बात को बताने का नहीं है। तुम जानती हो, तुमको और शराब को छोड़कर दूसरी बातों के लिए मेरे वक्त मुकर्रर हैं। हाँ, तुम और शराब ज़रूर हर वक्त.....

मलका—(त्रिलोकीनाथ का मुख ध्यान से देखकर) नहीं,नहीं तुम्हारे चेहरे से मालूम होता है कि कोई बहुत बड़ी बात है। मैं तो अभी और ज़रूर अभी सुनूंगी।

त्रिलोकीनाथ—तब एक शर्त पर।

मलका—क्या ?

त्रिलोकीनाथ—बताऊंगा, पर पहले दोनों डिकेन्टर भरकर ले आओ।

मलका—पैरों पड़ती हूँ, सिर्फ एक।

त्रिलोकीनाथ—एक तुम मेरे साथ पी लेना।

मलका—मुझे तो तुमने पहले ही काफी पिला दिया है।

त्रिलोकीनाथ—एक और सही, आज कुछ न बोलो, दिलाराम, जो कुछ मैं कहूँ, वह करती जाओ।

मलका—अच्छी बात है, लाती हूँ।

[मलका दोनों डिकेन्टर उठाकर जाती है। त्रिलोकीनाथ उठना चाहता है, पर उससे उठा नहीं जाता। तब पहले एक हाथ और फिर दोनों हाथ टेककर उठने का प्रयत्न करता है। जब फिर भी नहीं उठा जाता, तब शान्त होकर पुनः मसनद से टिक जाता है। अब कुछ सोचते हुए वह सामने की ओर देखने लगता है। उसकी दृष्टि में एक विचित्र प्रकार की निराशा दीख पड़ती है। कुछ देर पश्चात् वह एकाएक मुसकराता है। फिर क्रोध से नीचे का ओठ दांतों से दबाकर क्रूर दृष्टि से सामने देखते हुए दाहिने हाथ से एक मसनद को ठोकने लगता है। मलका का दोनों डिकेन्टर लिये हुए प्रवेश। मलका डिकेन्टर चौकी पर रखती है।]

त्रिलोकीनाथ—(शान्त होकर) पिलाओ, दिलरुबा, अब तुम पिलाओ और मैं तुम्हें पिलाऊँगा।

[दोनों दो ग्लास भरकर एक दूसरे को देते हैं।]

मलका—अच्छा अब नई बात क्या हुई है, यह तो बताओ।

त्रिलोकीनाथ—(शराब पीकर) जगन्नाथ रामनाथ व्यापारी का नाम जानती हो ?

मलका—(कुछ सोचते हुए) हाँ, कभी सुना तो है।

त्रिलोकीनाथ—उसने मेरे ख़िलाफ इनसालवैन्सी कोर्ट में दरख्वास्त की है। (फिर पीता है)

मलका—(चौंककर, आश्चर्य से) अच्छा, उसकी इतनी मज़ाल !

त्रिलोकीनाथ—उसकी नहीं, यह सब उसी रमाकान्त की शरारत है।

मलका—वही चेम्बर की प्रेसीडेन्टी।

त्रिलोकीनाथ—(पीकर) हाँ, वही चेम्बर की प्रेसीडेन्टी।

मलका—मैंने तो पहले ही कहा था कि लात मारो इन सब झंझटों को। (कुछ ठहरकर सोचते हुए) अच्छा, देखो मुझे एक बात पूछी है।

त्रिलोकीनाथ—वह क्या ?

मलका—अभी भी अगर तुम उस झगड़े से हट जाओ तो यह दरख्वास्त शायद वापस ले ली जाय।

त्रिलोकीनाथ—इस धमकी के डर से ? हरगिज़ नहीं। चाहे मेरा सब कुछ चला जाय, रहने का मकान और कपड़े भी न बचें, पर इन शोहदों के सामने मैं सर झुकाऊँगा ? कभी नहीं, हरगिज़ नहीं। तुम तो जानती हो कि मैं उस उसूल को मानने वाला हूँ कि जो चीज सबसे ज्यादा तकलीफ दे, उसे सबसे तेज ठोकर मारने की जरूरत है। (ग्लास खाली कर खाली ग्लास मलका को देकर) भरो, दिलरुबा, फिर भरो।

मलका—पर इतनी जल्दी जल्दी ?

त्रिलोकीनाथ—कुछ न कहो, एक लफ्ज नहीं, आज भी शराब न पिऊँगा तो फिर जिन्दगी में कब पिऊँगा, दिलरुबा ? (मलका फिर ग्लास भरकर देती है) क्यों, दिलाराम, अगर मैं दर दर का भिखारी हो गया तो तुम भी मुझे छोड़ दोगी ?

मलका—(त्रिलोकीनाथ के गले में हाथ डालकर) दस साल से तुम्हारे पास हूँ, होश सम्हालते ही तुम्हारे पहलू में आ गई। और तब से तुम्हीं को शौहर, तुम्हीं को सब कुछ समझा है। दस साल तक हाथी पर बैठने के बाद अब मलका किसी गधे पर सवार होगी ? दस साल तक मलका सच्ची मलका रहने पर अब गली कूचों की ख़ाक छानेगी ? इतने दिनों तक तुम्हारे पास रहने पर भी तुम मुझे मामूली रण्डी ही समझते हो ?

त्रिलोकीनाथ—(पीकर) नहीं, यह बात नहीं है, लेकिन.....

मलका—(बीच ही में) इसके मुतल्लक अगर तुम एक लफ़्ज़ भी कहोगे, तो मेरी बेइज़्ज़ती करोगे। (गर्व भरे शब्दों में) मलका ऐसी-वैसी रण्डी नहीं है। अगर वह खुशहाली में तुम्हारे साथ रही तो मुसीबत में भी तुम्हारे कदमों की लौंडी बन कर ही रहेगी।

[त्रिलोकीनाथ उसे गले से लगाकर चूम लेता है]

मलका—(कुछ ठहरकर) लेकिन यह प्रेसीडेन्टी क्या इतनी बड़ी चीज है कि इसके पीछे इस तरह बर्बाद हुआ जाय ?

त्रिलोकीनाथ—अब बात प्रेसीडेन्टी की नहीं रही, दिलरुबा, यह तो आन की बात है। आन के लिए त्रिलोकीनाथ अपना रुपया क्या अपनी ज़िन्दगी भी निसार कर देगा। (पीता है)

मलका—और चुनाव में अगर हार गए तो ?

त्रिलोकीनाथ—वह दूसरी बात है। वह खुद अपना सर झुकाना तो नहीं हुआ न ? रमाकान्त ! बदजात रमाकान्त ! अक्लवन्द आदमी तो समझ लेंगे कि वह कैसा है। पर, हाँ, मामूली आदमियों से उसके काले कारनामे खैरात की सफेद चादर के भीतर शायद छिपे हुए रहें, पर सच बात तो बाहर आकर ही रहती है, एक दिन सारी दुनिया जान जायगी कि वह कैसा दोज़ख़ी है। ओह ! (पीकर दाँत पीसते हुए) गरीब मज़दूरों और किसानों का खून पीनेवाला जौंक, दूसरों की बहू-बेटियों के पीछे घूमनेवाला कुत्ता, रुपया कमाने की मशीन·····(हाँफते हुए चुप हो जाता है।)

मलका—यह क्या है ? यह क्या है ? इस गुस्से से उसको नहीं, पर तुम्हारी तन्दुरुस्ती को ही नुकसान हो रहा है।

त्रिलोकीनाथ—लड़ूंगा, दिलरुबा, लड़ूंगा, चाहे तमाम दुनिया उसकी तरफ हो जाय, मैं अकेला लड़ूंगा (पीकर) इन्सालवैन्सी कोर्ट में यहाँ के बड़े-से-बड़े बैरिस्टर को खड़ा करके लड़ूंगा, चेम्बर की प्रेसीडेन्टी के लिए हर तरह की कोशिश करके लड़ूंगा, और जीत गया तो

उस जगन्नाथ रामनाथ पर हत्तक-इज़्ज़ती का दावा कर उसे मज़ा चखा दूँगा।(पीकर)जब तक दम रहेगी,लड़ूंगा। त्रिलोकीनाथ का सर कभी न झुकेगा, कभी नहीं।(ग्लास खाली कर खाली ग्लास को देते हुए) भरो, फिर भरो, दिलाराम, और कुछ गाओ, अच्छी-सी-चीज़ गाओ। इस दुनिया से उस दुनिया में आने दो जिसमें तुम्हारे, शराब के, फूलों के और गाने के सिवा पाँचवीं चीज नहीं है। तुम्हारे गाने से इन चैती गुलाबों की खुशबू भी कहीं ज्यादा बढ़ जाती है।

[मलका फिर ग्लास भरकर त्रिलोकीनाथ को देती है और अपना ग्लास खालीकर गाना आरंभ करती है। अब त्रिलोकीनाथ स्वयं भर-भर कर पीना आरंभ करता है।]

गायन—

बुलबुल का चुराया दिल नाहक़,
यह ख़ाम ख़यालो फूलों की।
लेती है तलाशी बादे सबा,
सब डाली डाली फूलों की॥
आलम है अनोखा कलियों का,
दुनिया है निराली फूलों की।
अल्लाह रे इस खुशियाली पर
यह खुश इकबाली फूलों की॥
मिसले बुलबुल नकहत से छुटे
दम भर को चमन मुमकिन ही नहीं।
होती है तसद्दुक़ फूलों पर
खुद रहने वाली फूलों की॥
माना कि लुटाया रातों को
गुलज़ार में मोती शबनम ने।
जब सुबह हुआ सूरज निकला
तब जेब थी खाली फूलों की॥

गुलचीं की भी नज़रें पड़ती हैं
सरसर के भी झोंके आते हैं।
हो ऐसे में किससे क्यों कर
कब तक रखवाली फूलों की॥
आती है ख़िज़ाँ अब रुख़सत कर
ज़िन्दा जो रहे फिर आयेंगे।
हमसे तो न देखी जायेगी
माली पामाली फूलों की॥
गुलज़ारे-जहाँ को जब देखा
तो शक्ल नज़र आई मुझको।
आलम से अलग आलम से जुदा
आलम से निराली फूलों की॥
हर ज़र्रे पर हर पत्ते पर
क़ुरबानो तसद्दुक करने को।
नकहत का खजाना खोल दिया
हिम्मत है ये आली फूलों की॥

त्रिलोकीनाथ—(गाने के बीच में झूमते हुए) वाह वाह! क्या तान है! दिल के फूल की पंखडियाँ बन्द-सी हो गई थीं वे फिर इस तान से खुल रही हैं, दिलरुबा, खुल रही हैं।

[मलका आदाब बजाकर गाना जारी रखती है।]

फिर रुत बदली फिर अब्र उठा
फिर सर्द हवायें चलने लगीं।
हो जायँ परी बन जायँ दुल्हन
अब डाली डाली फूलों की॥
हारों में गुंधे जकड़े भी गये
गुलशन भी छुटा सीना भी छिदा।

पहुँचे मगर उनकी गरदन तक
यह खुश इकबाली फूलों की ॥
बुलबुल को ये समझा दे कोई
क्यों खून के आँसू रोती है।
उड़ जायगी सुरखी फूलों से
मिट जायगी लाली फूलों की ॥
हम दिल में अपने दागों को
यों देखते हैं यों जाँचते हैं।
करता है निगहबानी जैसे
गुलज़ार में माली फूलों की ॥
जो लुत्फ़ कभी हासिल था हमें
वह लुत्फ़ चमन के साथ गया।
अब कुंजे कफ़स में खैंचते हैं
तसवीर ख़याली फूलों की ॥
ऐ बादे सबा मुरग़ाने चमन
देते हैं तुझे दिल से ये दुआ।
अल्लाह करे खुश वह भी रहे
खुश रहने वाली फूलों की ॥
सैयाद के घर से गुलशन तक
अल्लाह ही पहुँचाये मुझको।
उम्मीद नहीं मैं खुश होकर
देखूं खुशहाली फूलों की ॥
हर सिसरे में हर शैर में है
गुलहाय.....

त्रिलोकीनाथ—(फिर अधूरे गाने में ही ग्लास चौकी पर रखते हुए छटपटा कर) ओह ! दर्द.....

मलका—(चौंककर घबराते हुए) कहाँ दर्द ? कहाँ दर्द ? दिल में ?

त्रिलोकीनाथ—हाँ, वहीं है.....पर कुछ फिक्र की बात नहीं। (छाती पर दोनों हाथ लगाते हुए) मुझे सहारा देकर उठाओ। मैं सोने के कमरे में चलूंगा।

[मलका सहारा देती है, पर जब साधारण सहारा देने से त्रिलोकीनाथ नहीं उठता, तब दोनों कन्धों के नीचे हाथ डाल कर उठाती है। वह उठ तो जाता है, पर एकाएक लडखड़ाकर फिर बैठ जाता है।]

त्रिलोकीनाथ—ओह ! जोर का, बहुत जोर का दर्द है। डॉक्टर.....डॉक्टर को.....

मलका—(जोर से घबराकर) दरबान ! दरबान !

[जब दरबान नहीं आता तब मलका दौड़ कर दाहिनी ओर के दरवाजे के निकट जाती है।]

मलका—दरबान ! दरबान !

[दरबान का सफेद वरदी पहने हुए प्रवेश]

त्रिलोकीनाथ—ओह ! ओह !.....ओ.....

[त्रिलोकीनाथ छटपटाकर लेट जाता है। मलका और दरबान शीघ्रता से गद्दी के निकट आकर सम्हालते हैं।]

मलका—(घबराहट के स्वर में) दरबान ! डाक्टर को.....

दरबान—परन्तु अब डाक्टर क्या करेगा ? ये तो संसार में न.....

[मलका रो पड़ती है।]

यवनिका

चौथा अंक

स्थान—रमाकान्त के बंगले का दृश्य

समय—सन्ध्या

[कमरा उसी प्रकार सजा हुआ है जैसा दूसरे दृश्य में था, परन्तु इस समय उसमें कोई नहीं है। नेपथ्य में मोटर खड़े होने का शब्द होता है और कुछ ही देर में दाहिनी ओर के दरवाजे से रमाकान्त और रंगलाल का प्रवेश। दोनों व्यक्ति ठंडे कपड़े की शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा पहने हुए हैं। दोनों के सिर पर गोल पगड़ी और गले में चुना हुआ दुपट्टा है। रमाकान्त आते ही पगड़ी उतार कर एक टेबिल पर रख देता है और सोफा पर बैठता है।]

रमाकान्त—(रूमाल निकाल कर गले का पसीना पोंछते हुए) ओह ! अप्रेल के अन्त में ही इतनी गरमी हो गई। रंगलाल जी, पंखा तो खोल दीजिए।

[रंगलाल उठकर पंखे का स्विच खोलता है और पंखा चलने लगता है।]

रंगलाल—अभी आप मीटिंग से आ रहे हैं और वह भी भाषण देकर इसलिए और भी अधिक गरमी लग रही है। (कुछ ठहर कर) मीटिंगमें बहुत भीड़ थी। बाबू साहब, सारा टाउनहाल खचाखच भरा था।

रमाकान्त—और कल श्मशान में क्या कम भीड़ थी ? सारा नगर का नगर उलट पड़ा था।

रंगलाल—ऐसे वेश्यागामी और शराबी का इतना आदर बाबू साहब !

रमाकान्त—वह आदर उनका नहीं उनके वंश का था रंगलालजी। आप जानते हैं त्रिलोकीनाथ जी का घर इस नगर का सबसे प्राचीन रईसी घर है। उसने इस नगर और प्रान्त के बड़े उपकार किये हैं। मुझे तो दुःख है रंगलालजी, कि उस घर का अब द्वार ही बन्द हो गया; कोई बच्चा भी नहीं और किसी को वे गोद भी नहीं ले गए। (सिगरेट केस जेब से निकाल कर एक सिगरेट जलाते हुए) अच्छा हुआ.... (माचिस बुझ जाती है अतः दूसरी बार जलाते हुए) अच्छा हुआ..... (फिर वही होता है अतः तीसरी बार जलाते हुए) अच्छा हुआ रंगलालजी, कि मैं यहाँ था। कल मेरे श्मशान जाने और आज की सभा के समापति होने के कारण जगन्नाथ रामनाथ की कार्रवाई के सम्बन्ध में यदि किसी को मुझपर कोई सन्देह भी होगा तो भी वह अब निकल जायगा।

रंगलाल—(सिर और हाथ हिलाते हुए) एक तो सन्देह करने वाले कदाचित् इने-गिने होंगे और फिर आपके श्मशान तथा सभा में जाने के अतिरिक्त आपने आज जो भाषण दिया उससे तो किसी के मन में सन्देह का लवलेश भी नहीं रह सकता। ओह ! आप तो भाषण देते-देते रो तक पड़े; आँखें भर आईं हों, एक-दो आँसू निकले हों यह नहीं, यहाँ तक हुआ कि आपको आँखों में रूमाल लगाना पड़ा और उसके पश्चात् भी कुछ क्षणों तक मुख से एक शब्द नहीं निकल सका। बाद में भी जब आपने बोलना आरम्भ किया तब भी आपका गला कितना भारी था !

रमाकान्त—आप जानते हैं रंगलालजी, कि मेरा हृदय कितना कोमल है; किसी का दुःख मैं देख-ही नहीं सकता। आपको मालूम है कि कल श्मशान में बार-बार हृदय को रोकते रहने पर भी कितनी बार मेरी आँखों से आँसू निकले। मैं जानता हूं कि सभ्य समाजों में आजकल इस

प्रकार का रोना-धोना अच्छा नहीं समझा जाता, जिसमें सार्वजनिक सभाओं में तो यह और भी भद्दा दीखता है, पर मैं क्या करूं ? (कुछ ठहर कर) मैं सच कहता हूँ रंगलालजी, कि त्रिलोकीनाथजी के प्रति मेरे हृदय का सारा ईर्षा, द्वेष निकल गया; कल से ही मेरा हृदय उनके लिए आठ-आठ आँसू बहा रहा है।

रंगलाल—पहले भी आपके हृदय में उनके लिए ईर्षा, द्वेष कहाँ था ? आप यदि उनके विरुद्ध कुछ कर भी रहे थे तो चेम्बर की प्रतिष्ठा तथा उनके यहाँ धार्मिक संस्थाओं और निर्धन स्त्री-पुरुषों का जो रुपया जमा है, उनके हित के लिए।

रमाकान्त—(सम्हलकर) हाँ, हाँ, यह तो है ही, परन्तु मैं भी मनुष्य ही हूँ रंगलालजी, देवता तो नहीं हूँ। मैंने यह बात इसलिए कही कि कदाचित् पहले अनजान से उनके लिए मेरे मन में कभी-कभी ईर्षा, द्वेष उत्पन्न हो जाता रहा हो, पर अब तो मेरा हृदय उनके प्रति शुद्ध, नितान्त शुद्ध है।

[कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रंगलाल—आज बारह बजे रात की गाड़ी से ही आप शिमले जायँगे ?

रमाकान्त—जाना ही पड़ेगा रंगलालजी, परसों वाइसराय की पार्टी में सम्मिलित हुए बिना कैसे रहा जा सकता है ?

रंगलाल—शक्कर और नमक के सौदों का कुल हिसाब तैयार है।

रमाकान्त—हाँ, वह दो दिन की इस झंझट के कारण देखा ही नहीं जा सका। (हाथ की घड़ी देखते हुए) अभी तो बहुत समय है।

रंगलाल—छोटा-सा तो हिसाब ही है बाबू साहब, चार-छै लीफ एक ओर हैं और चार-छै दूसरी ओर।

रमाकान्त—अभी देख लेता हूँ। (कुछ ठहरकर) पूरा सौदा कट गया न ?

रंगलाल—जी हाँ,अब एक बोरा भी शक्कर या नमक का जमा या नामे, पास में बैलेन्स नहीं है ।

रमाकान्त—(सिगरेट को 'एशट्रे' में बुझाते हुए)चलिए, तो फिर राइटिंग टेबिल पर ही चला जाय ।

रंगलाल—बहुत अच्छी बात है ।

[दोनों उठते हैं । रमाकान्त आफिस चेयर पर बैठकर टेबिल लैम्प जलाता है और रंगलाल उन्हीं के निकट एक दूसरी कुर्सी पर बैठता है । रमाकान्त चश्मा उतार कर टेबिल पर रखता है और रंगलाल अपना चश्मा लगाकर जेब से एक कागज निकाल रमाकान्त को देता है । कुछ देर निस्तब्धता रहती है ।]

रमाकान्त—तो अपनी दुकान के नाम पर जो शक्कर बेची गई और नमक खरीदा गया, उसके नुकसान का लगभग बाईस हजार रुपया काटकर दोनों सौदों में पाँच लाख के कुछ ऊपर बचत रही ?

रंगलाल—जी हाँ, और यह केवल दो महीने के व्यापार में । इस बार अच्छा पाँसा पड़ गया बाबू साहब, दो महीने में इतनी बड़ी रकम कभी नहीं बची ।

रमाकान्त—भगवान् चाहेंगे, तो अब इसी प्रकार के पाँसे पड़ेंगे, रंगलालजी । (कुछ ठहरकर) इस सम्बन्ध में बाजार में क्या चर्चा है ?

रंगलाल—साधारण लोग तो यही कहते हैं कि आपने शक्कर और नमक दोनों में नुकसान उठाया; पर, हाँ, चार-छै समझदार लोगों की दूसरी बात है ।

रमाकान्त—ऊँह ! इन चार-छै समझदारों की मैं क्या परवाह करता हूँ ?

रंगलाल—(कुछ ठहरकर) क्यों बाबू साहब, इस बजट में शक्कर पर ड्यूटी बढ़ेगी और नमक पर कम होगी, यह आपको किसी सरकारी अफसर से मालूम हुआ होगा ?

रमाकान्त—(कुछ चकपकाकर, पर फिर सम्हलकर) नहीं, नहीं, रंगलालजी, ऐसा कहीं हो सकता है ? मैंने, मैंने अंदाज़ भर लगाया था।

[रंगलाल रमाकान्त की ओर देखता है। पर रमाकान्त दृष्टि दूसरी ओर कर लेता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रमाकान्त—सारा सौदा बनवारीलालजी की मार्फत ही हुआ न, रंगलाल जी ?

रंगलाल—जी हाँ।

रमाकान्त—उनको तो यथेष्ट दलाली मिल गई होगी।

रंगलाल—लगभग दस हजार रुपये के।

रमाकान्त—(चैकबुक निकालकर) पाँच लाख के नफे पर दो परसेन्ट के हिसाब से दस हजार होता है, पर शून्य ठीक नहीं, इसलिए ग्यारह हजार एकसौ ग्यारह का चक आपके लिए। (चैक लिखता है।)

रंगलाल—(प्रसन्न होकर परन्तु प्रसन्नता छिपाते हुए) इतना बड़ा सिरोपाव, बाबूसाहब !

रमाकान्त—(लिखते-लिखते ही) आपने कहा न कि इन दो महीनों में इतनी रकम कभी नहीं बची (चैक रंगलाल को देते हुए,जो खड़े होकर दोनों हाथों से अभिवादन कर चैक ले पुनः कुरसी पर बैठता है।) रंगलालजी, आपका और मेरा आज दस वर्ष से सम्बन्ध है। आपने मेरा काम पूरी ईमानदारीसे किया है। यदि आप इसी प्रकार ईमानदार रहे और मैं करोड़पति हुआ तो आपको भी लखपती बना दूँगा। (उंगली उठाकर हिलाते हुए) मुझसे किसी का पेट नहीं काटा जायगा।

रंगलाल—आपकी मुझ पर अत्यधिक कृपा है।

[कुछ देर फिर निस्तब्धता रहती है।]

रमाकान्त—और देखिए,इस वर्ष का अपना बजट तो अक्षय तृतीया से बनेगा न ?

रंगलाल—जी हाँ, उसी दिन से।

रमाकान्त—गतवर्ष जितना रुपया दान में खर्च हुआ था, उससे इस वर्ष के बजट में चौगुनी रकम रखिए।

रंगलाल—बहुत अच्छा, बहुत अच्छा।

[कुछ देर तक फिर निस्तब्धता रहती है।]

रमाकान्त—(उठते हुए) तो अब मैं हाथ-मुँह धोकर कुछ खा लेता हूँ।

रंगलाल—(उठकर) अवश्य, अवश्य।

रमाकान्त—देखिए, एक बात मैं भूल गया।

रंगलाल—आज्ञा दीजिए।

रमाकान्त—(खड़े-खड़े ही) त्रिलोकीनाथ के गाँव के स्कूल का उद्घाटन करना कमिश्नर साहब ने स्वीकार कर लिया है। तारीख १० मई उन्होंने नियुक्त की है। मकान तो तैयार है न ?

रंगलाल—जी हाँ बिलकुल तैयार है।

रमाकान्त—और कर्जे की जो छूट देना है उसका चिट्ठा ?

रंगलाल—वह पूरा तैयार नहीं है, पर दो-चार दिन में हो जायगा।

रमाकान्त—इस स्कूल के उद्घाटन उत्सव की खूब ढुग्गी पिटवाइये। चारों ओर के गाँवोंमें अभी से विज्ञापन बटना चाहिए और मुनादी होनी चाहिए जिससे हजारों आदमी जमा होवें। स्थानीय पत्र और एसोसियेटिड प्रेस के प्रतिनिधि को भी ले चलने का प्रबन्ध कर लीजिए। कमिश्नर-साहब के लिए जल-पान आदि की भी बहुत अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए। सारे कार्य में हज़ार रुपये तक खर्च कर डालिए।

रंगलाल—सारा प्रबंध आज्ञानुसार ही कर दिया जायगा।

रमाकान्त—मैं भी चार दिनों के भीतर ही शिमले से लौट आता हूँ। (कुछ ठहरकर) अच्छा देखिए, आप कुछ देर और ठहर जाइए।

हाथ-मुँह धोकर तथा भोजन कर मैं अभी आता हूँ। कदाचित् और कोई बात स्मरण आ जावे।

रंगलाल—बहुत अच्छी बात है, मैं बैठा हूँ।

रमाकान्त—(बायीं ओर जाते-जाते फिर रुककर) हाँ चेम्बर के प्रेसीडेन्ट का चुनाव तो १५ मई को है न ?

रंगलाल—जी हाँ।

रमाकान्त—अब तो मेरे चुनाव में कोई कठिनाई न होगी ?

रंगलाल—अब आपके विरुद्ध कोई खड़ा ही न होगा।

[रमाकान्त का बायीं ओर के दरवाजे से प्रस्थान। रंगलाल रमाकान्त के जाने के पश्चात् चैक जेब से निकाल टेबिल लैम्प के पास ले जाकर ध्यानपूर्वक देखता है। फिर उलट कर देखता है। बार बार उलटकर देख, उसे जेब में रख टेबिल लैम्प बुझा देता है। फिर प्रसन्नतापूर्वक मुसकराता और इधर-उधर घूमने लगता है। फिर एक कुरसी पर बैठकर धीरे-धीरे ओठों से सीटी बजाने लगता है। दाहिनी ओर के दरवाजे से बनवारीलाल का प्रवेश। वह सफेद कुरता और चुनी हुई धोती पहने है। सिर पर गोल पगड़ी लगाये है और गलेमें मोनिया ढंग से चुना हुआ श्वेत दुपट्टा डाले है। उसके मुख पर अत्यधिक उदासी छाई हुई है।]

रंगलाल—(खड़े होकर) आओ बनवारीलाल, एकाएक कैसे ?

बनवारीलाल—मैंने सुना कि बाबूसाहब आज शिमला जा रहे हैं, इसीलिए मिलने को चला आया। बंगले पर हैं न ?

रंगलाल—हाँ, हाँ हाथ-मुँह धोने और भोजन करने गये हैं। आते ही हैं, बैठो, बैठो।

[दोनों दो कुर्सियों पर बैठ जाते हैं, कुछ देर निस्तब्धता रहती है।]

रंगलाल—(बनवारीलाल की ओर देखते हुए) बहुत ही उदास दीखते हो, बनवारीलाल।

बनवारीलाल—इस नगर का पुराना रहनेवाला आज कौन उदास न होगा, रंगलाल ? पुरानी बातों के स्मरण पुराने रहने वालों को आज जैसे अवसर पर कितना व्यथित कर देते हैं, इसका अनुभव तुम्हें नहीं हो सकता। इस दृष्टि से तुम्हारी और मेरी लगभग बराबर अवस्था होते हुए भी तुम अपने को तरुण और मुझे वृद्ध कह सकते हो ?

रंगलाल—हाँ, हाँ, त्रिलोकीनाथ की मृत्यु के कारण।

बनवारीलाल—उनके स्वर्गवास से आज हमारे नगर के सबसे प्राचीन और प्रतिष्ठित घराने का दरवाजा बन्द हो गया। रंगलाल, तुम्हें इस कुल का पूरा वृत्त नहीं मालूम।

रंगलाल—हाँ, मैं तो अभी यहाँ थोड़े ही दिनों से आया हूँ, बनवारीलाल, बारह-तेरह वर्ष हुए होंगे।

बनवारीलाल—पर मुझे मालूम है, रंगलाल। मैं यहाँ पैदा हुआ, यहीं बड़ा हुआ, मेरी और, मेरी क्या मेरे पूर्वजों तक की, हड्डियाँ इस कुल के नमक से पुष्ट हुई हैं। इस कुल के भी दिन थे, रंगलाल, इनकी सभ्यता, इनकी संस्कृति एक-एक बात के लिए क्या कहा जाय ? एक-एक जन्म और एक-एक विवाह में इनके यहाँ लाखों रुपया खर्च हुआ है। परोपकार का भी एक ऐसा काम नहीं, जिसमें इनके वंश से सहायता न मिली हो। चाँदी, सोना नहीं पर जवाहरात का इनके घर से दान होता था। और त्रिलोकीनाथ भी कैसे सभ्य, कैसे सुसंस्कृत, कैसे दयालु, कैसी टेक वाले थे। हमारे भूषण थे, रंगलाल, सच्चे भूषण।

रंगलाल—अब तक तो तुम उनके वंशकी बड़ाई कररहे थे, इसलिए मैं कुछ न बोला, क्योंकि मैं पुरानी बातें जानता ही नहीं, पर अब जब तुम एक वेश्यागामी और शराबी पापी त्रिलोकीनाथ की भी बड़ाई करने पर उतारू हो गए तब तो मुझसे बोले बिना नहीं रहा जाता, बनवारीलाल !

बनवारीलाल—(चौंककर गौर से रंगलाल का मुख देखते हुए) क्या कहा, पापी ?

रंगलाल—हाँ, तुमसे तो मैं सभी कुछ कह सकता हूँ ?

बनवारीलाल—हाँ, हाँ, पर तुम भूल कर रहे हो, रंगलाल।

रंगलाल कैसी भूल ? क्या तुम वेश्यागमन और मद्यपान को पाप नहीं समझते ?

बनवारीलाल अवश्य समझता हूँ, पर दुर्गुण ही थे उनमें, गुण नहीं, यह बात तो नहीं है। निर्दोष संसार में कौन है ? इन दोषों का तो उन्होंने पूरा-पूरा फल पा लिया। इतने बड़े घर को चौपट कर दिया। इतनी कम अवस्था में अपना शरीर खो बैठे। परन्तु इन दो दोषों के कारण उनके जो अनेक सद्गुण थे, वे तो नहीं भुलाये जा सकते। इन दो दुर्गुणों के रहते हुए भी वे हमारे नगर के भूषण थे, सच्चे भूषण। उनके पश्चात् इस पुराने ढँग का सभ्य, सुसंस्कृत, दयालु और टेकवाला कोई रईस हमारे नगर में नहीं रहा।

रंगलाल—मैं तो उन्हें इस नगर का भूषण न मानकर दूषण मानता हूँ, बनवारीलाल, और इन दो दुर्गुणोंको संसार के सबसे बड़े पाप, अतः उन्हें सबसे बड़ा पापी।

बनवारीलाल—धर्म और पापकी तो बड़ी सूक्ष्म विवेचना है। कौन दुर्गुण छोटे पाप हैं और कौन बड़े, यह तो कहना बड़ी ही कठिन बात है, परन्तु यदि तुम त्रिलोकीनाथजी को अनेक सद्गुणों के रहते हुए भी पापी मानते हो, तब तो यह कहना कठिन होगा कि त्रिलोकीनाथजी और रमाकान्त जी दो में से कौन बड़ा...कौन बड़ा पापी.....

यवनिका

राजकमल

के कुछ अन्य प्रकाशन

राजनैतिक

एक महान् चुनौती

गांधी और स्टालिन

नेताजी और आजाद हिन्द फौज

उपन्यास

जय सोमनाथ

भगवान् परशुराम

लोमहर्षिणी

साहित्य

धरती गाती है

धीरे बहो गंगा

मुन्शीजी और उनकी प्रतिभा

नाटक

समस्या का अन्त

एकला चलो रे

कहानी संग्रह

पाजेब

मनोविज्ञान

बचपन के पहले पांच साल

हीनभाव

बचपन

हमारे जीवन का अर्थ

प्रेम और विवाह

अर्थशास्त्र

हमारी खुराक और आबादी की समस्या